हे प्रभो! यह तेरापंथ

अभ्युदय

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013-2014

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का परिपत्र

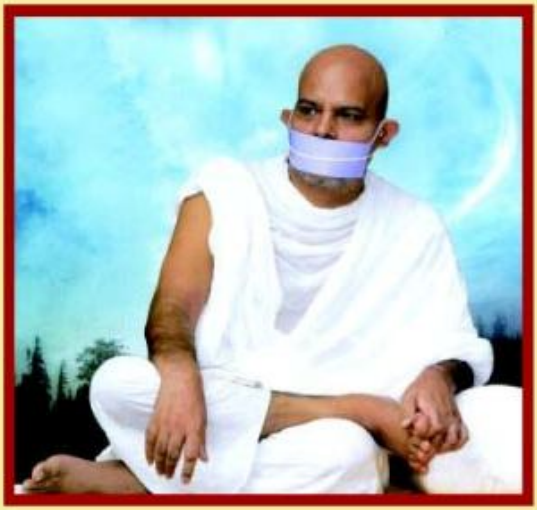

वर्ष 14 अंक 1 अप्रैल 2014

संबोध

राजनीतिके क्षेत्रमें काम करनेवालोंमें भी कुछ अंशोंमें साधना होनी चाहिए। साधु-संन्यासी राजनीति के क्षेत्र में मार्गदर्शन देते हैं। राजनीति पर धर्म का अंकुश रहे तो राजनीति में शुचिता रह सकती है। राजनीति मात्र सुख भोगने के लिए नहीं होती है। यदि ऐसा हो तो वह गलत है। राजनीति अस्पृश्य नहीं, वह सेवा का अच्छा माध्यम बन सकती है। राजनेताओं के सम्मुख कठिनाई आ सकती है, कार्यभार का आधिक्य हो सकता है। अतिव्यस्त भी हो सकते हैं पर अस्त-व्यस्त न बनें। दिमाग शान्त बना रहे।

आचार्य तुलसी द्वारा संस्थापित अणुव्रत आन्दोलन का संदेश है - आप किसी को मानते हो या नहीं मानते पर आप जो कुछ करते हो, उसमें नैतिकता व प्रामाणिकता को रखने का प्रयास करना चाहिए। राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले लोग नैतिकनिष्ठ होने चाहिए। भारत लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र में प्रशिक्षण की जरूरत है। इसके संचालक भी प्रशिक्षित हों। राजनेताओं के सामने एक ओर पार्टी है तो दूसरी ओर राष्ट्र। ऐसी स्थिति में राष्ट्रहित को प्रमुखता मिलनी चाहिए। पार्टी हित का ध्यान रखना गलत नहीं कहा जा सकता, पर राष्ट्रहित प्रधान रहे। सत्ता सुख भोगने, ऐश-आराम करने व पैसा इकट्ठा करने के लिए नहीं, सेवा हेतु मिली है। राजनेता यह सोचें कि उसे सेवा करने का अवसर मिला है, उसे उपकार करने हेतु अधिकार मिला है। राजनेता के लिए तीन कर्तव्य माने जाते हैं - सज्जन की सुरक्षा, दुर्जनों पर नियंत्रण व जनता की अपेक्षाओं की संपूर्ति करना।

भारत संतों की भूमि है। कितने-कितने संत घूमते हुए साधना कर रहे हैं। संतों के प्रति लोगों के मन में श्रद्धा का भाव है, सम्मान का भाव है। धर्म से अनुप्राणित व नैतिकता से प्रभावित राजनीति जहां है वहां विकास संभव है।

दुनिया में स्वल्प लोग होते हैं, जिनके पास चिन्तन हों, नेतृत्व क्षमता हो, जो यशस्वी व वर्चस्वी हो। जनता का भला हो, राष्ट्र का कल्याण हो, इसमें राजनेताओं की सेवा नियोजित होती रहे, यही अपेक्षित है।

आचार्य महाश्रमण

लोकतंत्र का रथ

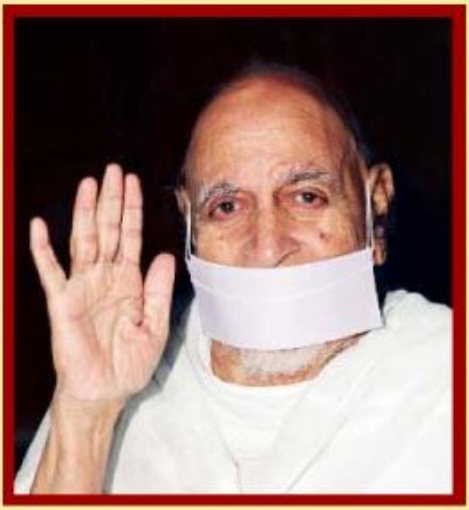

लोकतंत्र का रथ कीचड़ में फंसा है। रथ के सारथि उसे कीचड़ से बाहर निकालना चाहते हैं, पर निकालने की कला में अनभिज्ञ हैं। वे जितनी शक्ति लगा रहे हैं, रथ उतना ही गहरा धंसता जा रहा है। कारण साफ है। सारथि योग्य नहीं है। उनकी योग्यता के लिए कोई मानक भी निर्धारित नहीं है। सत्ता और अर्थ के प्रभाव अथवा जाति और सम्प्रदाय की प्रतिबद्धता से लोकसभा और विधानसभाओं के टिकिट मिलते हैं। मतदाता प्रलोभन, भय और प्रतिबद्धता के घेरे में खड़ा है। वोट बटोरने के लिए वांछनीय एवं अवांछनीय सभी प्रकार के उपाय काम में लिए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में योग्य व्यक्तियों का चयन कैसे होगा?

जो लोग लोकतंत्र का रथ हांक रहे हैं, उनके प्रशिक्षण की भी कोई व्यवस्था नहीं है। अबोध बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित आध्यापक का चयन होता है, किन्तु राष्ट्र का संचालन करने के लिए न शैक्षिक योग्यता की अपेक्षा है और न आन्तरिक अर्हता की। संयम, आत्मानुशासन, सहिष्णुता, प्रामाणिकता जैसे मूल्यों को अर्हता की कसौटियों के रूप में स्वीकार किया जाए तो युग के चालू प्रवाह को मोड़ा जा सकता है।

अणुव्रत आन्दोलन का एक कार्यक्रम है लोकतंत्र की शुद्धि। यह नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को लोकजीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए काम कर रहा है। चुनाव की प्रक्रिया को परिष्कृत करने की दृष्टि से अणुव्रत ने कुछ मानक प्रस्तुत किए हैं। उनके अनुसार वोट का अधिकारी वह व्यक्ति है –

- **जो ईमानदार हो।**
- **जो नशामुक्त हो।**
- **जो चरित्रवान हो।**
- **जो कार्यनिपुण हो।**
- **जो जाति और सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो।**

जिस राष्ट्र का लोक जागृत नहीं होता, उसका तंत्र स्वस्थ नहीं हो सकता। लोकतंत्र को स्वस्थ और विश्वस्त बनाना है तो ऐसे प्रत्यासी का चयन करना होगा, जो उपर्युक्त अर्हताओं से सम्पन्न हो। चयन का दायित्व लोक पर है। इसलिए लोकमत को चरित्र के पक्ष में करना जरूरी है। जिस दिन मतदाता और प्रत्याशी चरित्र के आधार पर चुनाव के महासमर में उतरेंगे, उसी दिन लोकतंत्र को विजयश्री प्राप्त हो सकेगी।

आचार्य तुलसी

अध्यक्षीय

वरेण्य बंधुवर !

भव्य भारत के भावी विकास की मंगलकामना से युक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था की पुनर्प्रतिष्ठा का पावन यज्ञ आज पूरे देश में प्रवर्धमान है। अभ्युदय का यह अंक जब आपके हाथों में होगा, उस समय आप भारत के महान लोकतंत्र की 16वीं लोकसभा के निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग दे रहे होंगे। अभ्युदय के पिछले अंक में पूज्यप्रवर द्वारा राष्ट्र के नाम दिए गए संदेश से आपने प्रेरणा ली होगी और अपने अमूल्य मतों के द्वारा एक स्वस्थ एवं समृद्ध भारत के निर्माण में अपने पुनीत कर्तव्य का पालन किया होगा।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य अणुव्रत प्रवर्तक गणाधिपति तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से देश में चारित्रिक उन्नयन एवं नैतिकता के पालन हेतु जो शंखनाद किया था, उससे संपूर्ण देश में नैतिक मूल्यों को अपनाने के प्रति एक जागृति उत्पन्न हुई थी और उस शंखनाद की गूंज भारत की संसद और देश के भिन्न-भिन्न प्रांतों में ही नहीं, विश्व के अन्य लोकतांत्रिक देशों में भी सुनाई पड़ी थी। लोकतंत्र के शुद्धिकरण के लिए उनके द्वारा दिए गए सूत्र आज भी हमारे लिए मंत्रवाक्य बने हुए हैं। हजारों मीलों की पदयात्रा करके उन्होंने भारत की आत्मा को जगाने और जीवन के हर क्षेत्र में नैतिकता लाने हेतु जो प्रयास किया वह भारत के लोकतंत्र के इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है।

महातपस्वी आचार्य महाश्रमण भारत के हर भाग में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए पदयात्राएँ कर रहे हैं और अपने पावन प्रवचनों द्वारा सौजन्यता, सौहार्द और समन्वय जैसे सूत्रों का पाथेय प्रदान कर मानवीय एकता का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आपश्री जातिवाद और संप्रदायवाद का विरोध कर उसके अभिशाप से समाज को मुक्त करने का स्तुत्य प्रयास कर रहे हैं। वे ऐसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण हेतु संबोध दे रहे हैं, जिसमें नैतिकता, सम्यकत्व और शील का समन्वय हो। एक स्वस्थ एवं सुदृढ़ भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि भारत के नागरिकों में ईमानदारी के प्रति आस्था, राष्ट्रीय हित की सुरक्षा के प्रति संपूर्ण समर्पण तथा देशभक्ति की उत्कट भावना हो। महान भारत का महान लोकतंत्र ऐसे ही लोगों के हाथों में सुरक्षित रह सकता है।

महासभाके ग ौरवशालीइ तिहासक ए कस र्विथान ावीनअ ारेअ ालोकमयअ ध्यायउ सस ामयउ दघाटितह ुआज ाबत ारापंथ धर्मसंघ को सही अर्थों में वैश्विक धर्मसंघ का स्वरूप प्रदान किया गया। महासभा के स्थापना काल से लेकर अब तक उसके पदाधिकारियों द्वारा संगठन यात्रा के क्रम में विदेश की यात्रा नहीं की गई थी। महासभा के इतिहास में यह पहला अवसर था जब उसके पदाधिकारियों का एक शिष्टमंडल विदेश की धरती पर संगठन यात्रा हेतु 22 अप्रैल, 2014 को दुबई पहुँचा और प्रवासी श्रावक समाज को तेरापंथ धर्मसंघ की विभिन्न गतिविधियों से समग्र रूप से जुड़ने का आह्वान किया।

मैंने दुबई के प्रवासी तेरापंथी श्रावक समाज को दुबई यात्रा के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए विशेष रूप से कहा कि मैं महान भारत के महान धर्मसंघ के महान शान्तिदूत आचार्य महाश्रमण के विश्व शान्ति एवं अहिंसा के संदेश को लेकर आपके पास आयाहूँअ ारेउ सेअ ापकेम ाध्यमसे ेप ूरेव िश्वम ेंप ्रचारित-प्रसारितक रनेक ाक ामनार खताहूँ ।क योंकिम ैंम ानताहूँ ाक भारत से दुर कोई भी तेरापंथी भाई-बहन जहाँ कहीं भी है, वह तेरापंथ की विरासत को लेकर चल रहा है और तेरापंथ धर्मसंघ के संवाहक के रूप में पूज्य आचार्यों के अवदानों से विश्व समुदाय को अवगत कराकर मानवता के कल्याण में अहम भूमिका निभा रहा है। हमने उन्हें यह भी बताया कि हम अपने मन में सात्विक आत्मबल तथा पैरों में युग परिवर्तन की गति लेकर आपके मध्य आए हैं। हमारा लक्ष्य आपको तेरापंथ के संघीय एवं संस्थागत गतिविधियों की जानकारी प्रदान कर उसके विविध कार्यक्रमों और परियोजनाओं से जोड़ना है। इस पूरे क्रम में एक ओर जहाँ जैनत्व सुरक्षित होगा, वहीं हमारी भावी पीढ़ी भी संस्कारित और शुभ कर्मों के प्रति प्रेरित होगी। क्योंकि तेरापंथ धर्मसंघ मात्र एक धर्मसंघ ही नहीं, राष्ट्र, समाज एवं व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला भी है। अहिंसा, करुणा, मैत्री, नैतिकता, त्याग, अणुव्रत, पंचाचार आदि के माध्यम से

तेरापंथ ने संपूर्ण समाज, राष्ट्र एवं मानवता को अभूतपूर्व वरदान दिया है।

बंधुवर, आपको यह बताते हुए सात्विक प्रसन्नता हो रही है कि महासभा द्वारा लन्दन की संगठन यात्रा भी की गई, जहाँ पिछले साठ वर्षों से तेरापंथी परिवार प्रवासित हैं एवं धर्मसंघ के विभिन्न अवदानों के साथ जुड़े हुए भी हैं, परंतु कतिपय कारणों से अब तक लन्दन में सभा का गठन नहीं हो पाया है। महासभा की नई टीम की संकल्पना के अनुरूप उन सभी स्थानों पर सभा का गठन किया जा रहा है, जहां भी उचित संख्या में तेरापंथी परिवार प्रवासित हैं। इसी क्रम में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लन्दन में सभा के गठन हेतु पहल की गई, ताकि विदेशों में भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं जैन संस्कारों की सुरक्षा हो तथा लंदन में तेरापंथ के आचार्यों के अवदानों को जन-जन तक पहुंचाने और संगठन को सुदृढ़ करने में सफलता मिले।

लंदन के श्रावक समाज को भारत में तेरापंथ समाज एवं महासभा द्वारा साधना, शिक्षा, संस्कार-निर्माण, साहित्य-सृजन, समन्वय और संप्रसार आदि क्षेत्रों में आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों और विद्यमान में तेरापंथ धर्मसंघ के युगप्रवर्तक आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी समारोह से संबंधित वर्षव्यापी कार्यक्रमों की अवगति प्रदान की और बताया कि महासभा द्वारा इस दिशा में जो उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं उनमें राष्ट्रपति द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह से संबंधित 'लोगो' का लोकार्पण, भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी के चित्र को शामिल कर सिक्के को जारी करवाना, अणुव्रत संकल्प यात्रा का संचालन, आचार्य तुलसी के गीतों की सीडी का निर्माण, आचार्य तुलसी स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन, तुलसी वाङ्मय का प्रकाशन, एनिमेशन फिल्म का निर्माण आदि शामिल हैं, जो तेरापंथ की कीर्ति पताका को शिखर तक पहुँचाएंगे और उनसे आह्वान किया कि वे इन कार्यक्रमों से जुड़ें तथा कंधे से कंधा मिलाकर अपनी जय यात्रा को ध्येय सिद्धि के शिखर तक ले जाने में योगभूत बनें।

हमने प्रवासी बंधुओं को श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में दिल्ली में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के तृतीय एवं चतुर्थ चरण के प्रस्तावित भव्य कार्यक्रम में उपस्थित होकर युगपुरुष आचार्य तुलसी को अपनी श्रद्धा-प्रणति अर्पित करने हेतु आमंत्रण दिया। इसके साथ ही शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 100 तेरापंथी सभा भवनों के निर्माण, 100 नई सभाओं के गठन, आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण अनुसंधान एवं शिक्षा फाउंडेशन, आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल तथा शताब्दी अक्षय निधिक षिक ि रिकल्पनास िस मग्र ावासीब न्धुओंस िज ुड़नेक ाअ ाग्रहक ियाग याि ाकिस ंस्थाए वंस माजके ि निर्माणम ें योगभूत बनकर उन्हें भी गौरव की अनुभूति हो सके।

त्रिदिवसीय लन्दन प्रवास की एक बड़ी उपलब्धि यह रही कि साधार्मिक भाइयों से व्यापक स्तर पर सम्पर्क कर संगठन को गति एवं नई ऊंचाइयाँ देने हेतु चर्चा की गई। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर लंदन विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित स्कूल ऑफ ओरिएंटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज में आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसके साथ ही तेरापंथ के आचार्यों के साहित्यिक अवदान पर अनुसंधान हेतु शोधार्थियों को सहयोग देने का आश्वासन दिया गया।

बंधुवर, महासभा समाज हित में अपनी मूल प्रवृत्तियों के साथ गतिमान है और निरंतर तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज के उन्नयन एवं विस्तार की दिशा में अग्रसर है और सभी तेरापंथी भाइयों-बहनों से आग्रह करता है कि वे महासभा द्वारा किए जा रहे ऐतिहासिक कार्यों में योगभूत बनकर गौरव की अनुभूति करें। गूँजा तेरापंथ विश्व में स्वप्न हुआ साकार

ब्रिटेन के मंच से तेरापंथ की जय-जयकार।
तेरापंथ की जय-जयकार जन-जन है बोला
देख संपूर्ण मानवता हितार्थ कार्य, विश्व अचरज से है डोला।
गूँज उठी अणुव्रत की वाणी मंगलमय जन-जन कल्याणी।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

प्रेरणा पाथेय

चुनाव लोकतंत्र की रीढ़ है। उसके लिए मतदान की पद्धति को उपयुक्त समझा जाता है। मतदान के प्रति उपेक्षा नहीं बरती जाए।... चुनाव पद्धति स्वस्थ हो, यह अपेक्षित है। उसके शुद्धिकरण के लिए सम्यक उपाय अपनाए जाएं।

आचार्य तुलसी

विधायकों और सांसदों को अहिंसा का प्रशिक्षण लेना ज्यादा जरूरी है। विधायक और सांसद प्रशिक्षित होंगे तो विधानसभा और लोकसभा शांति से चल सकेगी।... इससे एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण होगा, समाज का बहुत भला होगा। ... समाज में इंसानियत का विकास हो, भाईचारा बढ़े, समाज और राष्ट्र की एकता मजबूत हो, नैतिक मूल्यों का विकास हो, यह मुख्य विजन होना चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञ

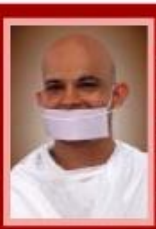

स्वस्थ भारत, सुदृढ़ भारत के लिए आवश्यक है कि भारत के नागरिकों में ईमानदारी के प्रति आस्था हो।... राष्ट्रीय हित प्रमुख रहे और अपना दल नंबर दो पर रहे, इस चेतना का जागरण होने से सुदृढ़ भारत की परिकल्पना साकार हो सकती है। नेतृत्व वर्ग में देशभक्ति की उत्कट भावना होनी चाहिए। भारत लोकतांत्रिक देश है। कर्तव्यनिष्ठा एवं स्वयं पर अनुशासन रखकर लोकतंत्र को मजबूत किया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण

संपादकीय

सुहृदवर,

अभ्युदय के इस अंक में पाठकों को महासभा की कई उल्लेखनीय गतिविधियों के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी उपलब्ध होगी। सर्वप्रथम, भगवान महावीर की जयन्ती इस माह के द्वितीय सप्ताह में मनाई गई। तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज सहित विश्व भर के जैन धर्मावलंबियों ने महावीर जयन्ती के अवसर पर भगवान महावीर के महान अवदान – अहिंसा, समता, अपरिग्रह, तप, संयम जैसे महान सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा व्यक्त की और उन्हें अपने जीवन में उतारने का संकल्प दुहराया। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशवें अधिशास्ता परम पूज्य आचार्य महाश्रमण जी ने इस अवसर पर अपने पावन संदेश में कहा है कि 'भगवान महावीर दुनिया में उत्तमोत्तम महापुरुष थे। उनके जीवन में अहिंसा की साधना थी और जिसमें अहिंसा की साधना पुष्ट हो जाती है, उसमें समता का भी विकास हो जाता है। धर्म का परम सारभूत तत्त्व है समता की साधना। अहिंसा, संयम और तप उसी के स्फुल्लिंग हैं।' पूज्य प्रवर के ये संदेश अमृत घट के समान हैं, जिनके एक-एक कण कोटि-कोटि जनों के जीवन को अमृत-तत्त्व के प्रवाह में आप्लावित करने वाले हैं।

इस अंक का एक और महत्वपूर्ण विषय है चुनाव शुद्धिकरण हेतु तेरापंथ धर्मसंघ और महासभा का विनीत प्रयास। महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने इस दिशा में सार्थक पहल करते हुए चुनाव प्रक्रिया की शुद्धिकरण हेतु आचार्य महाश्रमण द्वारा दिए गए संदेश एवं उसके साथ एक संकल्प पत्र सभी उम्मीदवारों के पास भेजे हैं ताकि देश की राजनीति में नैतिकता को प्रश्रय मिले। अनेक उम्मीदवारों ने संकल्प पत्र भर कर भेजे भी हैं, जो हमारे प्रयासों की सार्थकता सिद्ध करते हैं।

इस माह महासभा के गौरवशाली इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय उस समय जुड़ गया जब अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के एक प्रतिनिधि मंडल ने विदेश स्थित तेरापंथी सभाओं की सार-संभाल हेतु अंतरराष्ट्रीय संगठन यात्रा की, जो संगठन यात्रा के क्रम में एक सर्वोज्ज्वल कड़ी है। नए संवत के शुभारंभ के साथ ही अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ द्वारा की गई यह शुभ शुरुआत देश के साथ-साथ विदेश में भी तेरापंथ के धवल ध्वज को फहराने तथा मानवीय चरित्रोत्थान तथा संस्कार निर्माण की दृष्टि से एक नया क्षितिज खोलने की दिशा में प्रथम चरणन्यास है। यह पूरे तेरापंथ समाज के लिए परम गौरव का प्रसंग है।

महावीर जयन्ती की हार्दिक शुभकामनाएं और भगवान महावीर के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर धर्मपथ पर निरंतर अग्रसर रहने की भावना सभी में पल्लवित-पुष्पित हो, इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ,

सुरेन्द्र कुमार बोरड़
संपादक

महासभा संवाद

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल को आचार्य तुलसी पर लिखित पुस्तक उपहृत

आचार्यश्री महाश्रमण की विदुषी सुशिष्या साध्वीश्री अणिमाश्री जी, साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी एवं अन्य साध्वियों के साथ कोलकाता तेरापंथ समाज का प्रतिनिधि मंडल महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री एम. के. नारायणन के साथ राजभवन में मिला एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में संचालित विविध गतिविधियों तथा कार्यक्रमों की अवगति प्रदान की। इस अवसर पर आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित अंग्रेजी पुस्तक 'पायनीयर सेंट ऑफ द एज – आचार्य तुलसी' राज्यपाल महोदय को भेंट की गई। साध्वीश्री अणिमाश्री जी ने श्रद्धेय आचार्य तुलसी के बारे में जानकारी प्रदान की और आचार्य तुलसी तथा आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा मानवता के हितार्थ किए गए कार्यों एवं देश, समाज तथा मानव समाज के प्रति उनके अवदानों को रेखांकित किया। साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन, उसकी नियमावली और संकल्प पत्र के संबंध में राज्यपाल महोदय को जानकारी दी।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने महामहिम राज्यपाल को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता युगप्रवर्तक आचार्य तुलसी द्वारा देश एवं समाज के नैतिक उत्थान हेतु प्रारंभ किए गए अणुव्रत आन्दोलन का संक्षिप्त परिचय दिया और आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान देश भर में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की महत्ता तथा प्रासंगिकता से अवगत कराया। उन्होंने राज्यपाल महोदय को बताया कि आचार्य तुलसी की पावन जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशवें अधिशास्ता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी युवकों को व्यसनमुक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं और अब तक एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों ने व्यसनमुक्त रहने का संकल्प व्यक्त किया है। श्री दुगड़ ने यह भी बताया कि संभावित कार्यक्रम के अनुसार आचार्य श्री महाश्रमणजी पदयात्रा करते हुए 2017 में कोलकाता पधारेंगे और यहाँ चातुर्मास कर इस क्षेत्र के लोगों को अपने पावन प्रवचनों से पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करेंगे।

महामहिम राज्यपाल श्री एम. के. नारायणन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जैन धर्म एक विशिष्ट धर्म है एवं जैन समाज के लोग संख्या में कम होते हुए भी समाज के कल्याण हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने अणुव्रत के नियमों एवं उसकी विशिष्टताओं के प्रति प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि वे भी अणुव्रती बनने के बारे में चिंतन करेंगे।

इस प्रतिनिधिमंडल में आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़ एवं प्रधान न्यासी श्री भीखमचंद पुगलिया, महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद, उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया, न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़, साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद, तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष श्री अमरचंद दुगड़ तथा उपाध्यक्ष श्री हेमन्त दुगड़, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती संगीता सेखानी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की संयोजना में महासभा के न्यासी श्री तुलसी दुगड़ का सराहनीय श्रम रहा।

महासभा के पदाधिकारियों की प्रथम ऐतिहासिक अन्तरराष्ट्रीय संगठन यात्रा

दुबई सभा की संगठन यात्रा

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारियों का एक शिष्टमंडल अपनी प्रथम अंतरराष्ट्रीय संगठन यात्रा हेतु 22 अप्रैल, 2014 को दुबई पहुँचा। शिष्टमंडल में महासभा के प्रधान न्यासी श्री बिमल कुमार नाहटा, न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया, महामंत्री श्री विनोद बैद, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ एवं कार्यसमिति सदस्य श्री दिलीप सिंघवी तथा श्री हेमन्त दुगड़ शामिल थे।

दुबई सभा के तत्वावधान में इंडिया क्लब परिसर में आयोजित कार्यक्रम में महासभा के पदाधिकारियों ने दुबई के प्रवासी समाज के साथ विचार-विमर्श किया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने अभिभाषण में सर्वप्रथम सभी उपस्थित प्रवासी श्रावकों को इस बात की बधाई दी कि उन्होंने अपने देश से दूर विदेश की धरती पर रहकर भी अपने संस्कारों को सुरक्षित रखा है और संघीय दायित्वों को निभाते हुए समाज की सेवा में तत्पर हैं। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ एवं महासभा के गौरवशाली इतिहास की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए वर्तमान में महासभा की प्रवर्धमान गतिविधियों पर प्रकाश डाला। आगामी तुलसी जन्म शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में वर्ष-व्यापी कार्यक्रमों की विस्तार से अवगति प्रदान की। उन्होंने अणुव्रत संकल्प यात्राओं का उल्लेख करते हुए बताया कि अणुव्रत की आचार-संहिता के व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से देश के चारों कोनों में चार अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ यात्रायित हैं, जिनके माध्यम से जन जागरण के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें विद्यालयों एवं कालेजों में अणुव्रत पर संगोष्ठियों का आयोजन, अणुव्रत आचार-संहिता पट्ट का वितरण, प्रभात फेरियों का आयोजन आदि शामिल हैं। अब तक इन यात्राओं में हजारों व्यक्तियों ने संकल्प पत्र भरकर जीवन में अणुव्रत को अपनाने का पुनीत व्रत लिया है।

तेरापंथ की महान परंपरा को रेखांकित करने वाले तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संबंध में उपस्थित श्रावक समाज को सूचित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने बताया कि समारोह के दो चरणों का आयोजन गौरवशाली ढंग से सम्पन्न हो चुका है। शेष दो चरणों का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में आगामी सितम्बर, 2014 एवं अक्टूबर, 2014 में श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में प्रस्तावित है। उन्होंने प्रवासी बंधुओं का आह्वान किया कि वे तेरापंथ के इतिहास के उस आलोकमय अवसर पर अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर युगपुरुष आचार्य तुलसी को अपनी श्रद्धा-प्रणति अर्पित करें और समारोह के गौरवमय क्षण के साक्षी बनें। उन्होंने दुबई में आचार्य तुलसी के आगामी महाप्रयाण दिवस पर एक विराट आयोजन हेतु भी प्रवासी समाज से अपील की।

श्री कमल कुमार दुगड़ ने तेरापंथ के आचार्यों के विभिन्न अवदानों के प्रचार-प्रसार हेतु दुबई में एक केन्द्र की स्थापना पर भी जोर दिया ताकि खाड़ी के इस देश में सुदूर पश्चिमी देशों एवं अन्य निकटवर्ती देशों के व्यक्ति उपस्थित हो सकें। उन्होंने कहा कि दुबई की भौगोलिक स्थिति इसके सर्वथा अनुकूल है। अगर इस प्रस्तावित प्रकल्प में आर्थिक सहभागिता की अपेक्षा होगी तो उसे आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति पूरा करेगी।

महासभा के अध्यक्ष ने शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 100 तेरापंथी सभा भवनों के निर्माण, 100 नई सभाओं के गठन तथा शताब्दी अक्षय निधि कोष की परिकल्पना से समग्र प्रवासी बन्धुओं से जुड़ने का आग्रह किया ताकि संस्था एवं समाज के निर्माण में योगभूत बनकर उन्हें भी गौरव की अनुभूति हो सके। अध्यक्ष महोदय के इस आह्वान पर वहां उपस्थित श्रावक समाज ने अक्षय निधि कोष योजना से जुड़ने हेतु एक सौ से अधिक नामों की घोषणा तत्काल कर दी एवं आगे इस संख्या को और ज्यादा बढ़ाकर सभी को जोड़ने की भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम में लगभग सभी परिवारों की उपस्थिति थी। इस अवसर पर महासभा के प्रधान न्यासी श्री बिमल कुमार नाहटा, उपाध्यक्ष

श्री किशनलाल डागलिया और महामंत्री श्री विनोद बैद ने भी अपने विचारों की प्रस्तुति दी। दुबई सभा के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बैंगाणी ने स्वागत करते हुए विदेश की धरती पर नई शताब्दी की प्रथम विदेश यात्रा हेतु महासभा के पदाधिकारियों के दुबई आगमन को गौरव का प्रसंग बताया। उन्होंने महासभा के पदाधिकारियों को दुबई समाज द्वारा वर्ष भर में की जा रही आध्यात्मिक गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने अन्तरराष्ट्रीय संगठन यात्रा के प्रभारी के रूप में दुबई के श्री राजेन्द्र बैंगाणी एवं विदेश में साहित्य प्रचार-प्रसार के प्रभारी हेतु श्री चंचल बोथरा के नामों की घोषणा की।

कार्यक्रम की संयोजना में सभी प्रवासी बन्धुओं की सहयोगिता एवं सहभागिता रही। आभार ज्ञापन महासभा के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कमार बोरड़ ने किया। आगन्तुक अतिथियों का सम्मान स्थानीय सभा के पदाधिकारियों द्वारा साहित्य भेंट करके किया गया।

दुबई के जैन संगठनों के साथ महासभा के शिष्टमंडल की भेंट

दुबई 23 अप्रैल 2014। महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में दुबई की संगठन यात्रा पर पधारे शिष्टमंडल के सदस्यों ने आज सुबह दुबई सभा के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बैंगानी के निवास पर जैन समाज के स्थानीय संगठनों के पदाधिकारियों से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर श्री चन्दू सिरोहिया, अध्यक्ष, जैन संघ; श्री शेखर पाटनी, उपाध्यक्ष, जैन संघ; श्री विमल कोठारी, महासचिव, जीतो; श्री ललित कामदार, अध्यक्ष, जैन सोशल ग्रुप; श्री पारस जालोरी, निवर्तमान अध्यक्ष, दुबई जैन सोशल ग्रुप तथा श्री रमेश जैन आदि ने उपस्थित होकर महासभा अध्यक्ष के साथ संयुक्त अरब अमीरात में प्रवर्धमान विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के संदर्भ में चर्चा की।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ का सुझाव था कि इस खाड़ी प्रदेश में तेरापंथ समाज का अपना एक अलग केन्द्र हो, भवन हो, स्थान हो, जहां से आध्यात्मिक-सामाजिक गतिविधियां नियमित रूप से संचालित हो सकें। इस स्थान का उपयोग समग्र जैन समाज करे तो उसमें आपत्ति नहीं। श्री दुगड़ ने बताया कि स्थानीय प्रशासन के कानून को समझते हुए अणुव्रत जैसे सम्प्रदायविहीन नैतिक आन्दोलन की गतिविधियों के संचालन में सरकारी अड़चन की आशंका नहीं रहनी चाहिए, फिर भी इस विषय में सभी पहलुओं पर चिन्तन करते हुए भावी योजनाओं को मूर्त रूप दिया जाए। हमारी सभी भावनाएँ, अपेक्षाएँ एवं योजनाएँ आध्यात्मिक अनुशंसा के आधार पर ही कार्य में परिणत होंगी।

सभी प्रवासी बन्धुओं ने महासभा के शिष्टमंडल का आत्मीय भाव से स्वागत-सत्कार किया एवं इस यात्रा को गौरव का प्रसंग बताया।

महासभा के पदाधिकारियों द्वारा लन्दन विश्वविद्यालय में बैठक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया, महामंत्री श्री विनोद बैद एवं कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ ने लन्दन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरिएंटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज के अन्तर्गत संचालित सेंटर फॉर जैन स्टडीज के विभागाध्यक्ष श्री पीटर फ्लुगल के साथ बैठक कर विस्तृत विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी कांतिप्रज्ञा भी उपस्थित थीं। बैठक में जैन दर्शन के क्षेत्र में तेरापंथ के प्रणेता आचार्यश्री भिक्षु से प्रारंभ कर आचार्य जीतमल जी तक के आचार्यों के साहित्यिक योगदान पर अनुसंधान कर उन्हें कैसे विश्वव्यापी रूप दिया जाए इस पर विस्तृत चर्चा की गई। इस विषय में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ का सुझाव था कि जब इस शोध में तीन-चार वर्ष का समय लग रहा है तो इस शोध कार्य के क्षेत्र में भिक्षु युग से लेकर महाप्रज्ञ युग तक की अवधि को समाविष्ट किया जाना प्रासंगिक लगता है, क्योंकि निकट भविष्य में ही आचार्य महाप्रज्ञ के जन्म शताब्दी का

गौरवपूर्ण अवसर हमारे समक्ष आ रहा है। अध्यक्ष महोदय के इस समसामयिक सुझाव पर सभी ने शोध कार्य में महाप्रज्ञ युग तक के कालखंड को शामिल करने हेतु सहमति व्यक्त की।

प्रो. फ्लुगल ने यह विचार व्यक्त किया कि हालांकि तेरापंथ के आचार्यों ने प्राचीन जैन साहित्य को जनोपयोगी बनाने के उद्देश्य से जैनागमों की विस्तृत व्याख्या एवं टिप्पणी कर उसे जनसाधारण में प्रचारित-प्रसारित करने का महनीय कार्य किया है, परन्तु इसे विश्वव्यापी बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षा केन्द्रों में जैनागमों पर शोध करने की अपेक्षा है। प्रो. फ्लुगल ने इस दिशा में प्रस्तावित शोध कार्य का उल्लेख किया तथा तैयार होने वाले शोध-प्रबंध का प्रकाशन लन्दन विश्वविद्यालय से करने की भावना व्यक्त की।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने प्रो. पीटर फ्लुगल द्वारा लन्दन विश्वविद्यालय में किए जा रहे शोध कार्य हेतु पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का उद्देश्य जैन दर्शन एवं उसके सिद्धान्तों के द्वारा अहिंसा, विश्वशान्ति एवं नैतिकता की पुनर्स्थापना है। चर्चा के अनुसार शोध ग्रन्थ तीन भागों में प्रकाशित होना प्रस्तावित है। ग्रन्थ को डिजिटिलाईजेशन करवाकर इसे इंटरनेट पर भी उपलब्ध करवाया जाएगा ताकि यह सुलभता के साथ हर राष्ट्र के सुधीजनों को उपलब्ध हो सकेगा।

लन्दन में तेरापंथी सभा का गठन

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारियों ने ब्रिटेन में लंदन की संगठन यात्रा की, जिसमें महासभा के न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया, महामंत्री श्री विनोद बैद, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ एवं कार्यसमिति सदस्य श्री दिलीप सिंघवी तथा श्री हेमन्त दुगड़ शामिल थे। महासभा के पदाधिकारियों ने अपने त्रिदिवसीय लन्दन प्रवास में साधार्मिक भाइयों से व्यापक स्तर पर सम्पर्क किया एवं संगठन को गति एवं नई ऊंचाइयाँ देने हेतु चर्चा की। इसी क्रम में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त उद्योगपति श्री निर्मल सेठिया परिवार, श्री निर्मल बांठिया परिवार एवं श्री माणक चोरड़िया परिवार तथा अन्य परिवारों से संपर्क कर गोष्ठियों के माध्यम से संघीय अवदानों एवं महासभा की गतिविधियों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय संस्कृति, सभ्यताएं एवं जैन संस्कारों की सुरक्षा हेतु तथा लंदन में तेरापंथ के आचार्यों के अवदानों को जन-जन तक पहुंचाने और संगठन को सुदृढ़ करने के लिए लंदन में एक सभा का गठन अत्यंत आवश्यक है।

महामंत्री श्री विनोद बैद ने महासभा के पदाधिकारियों का प्रवासित तेरापंथी परिवारों के साथ परिचय कराते हुए बताया कि सभा का गठन होने पर स्थानीय लोगों का संपर्क धर्मसंघ के विभिन्न आयामों के साथ निरंतर बना रहेगा। इस अवसर पर लंदन के उत्साही कार्यकर्ता श्री माणक चोरड़िया एवं डॉ. सुनील दुगड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

गहन विचार विमर्श के उपरान्त लंदन में सभी तेरापंथी परिवारों के सदस्यों ने सर्वसम्मति से सभा के गठन का निर्णय किया एवं अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ से अनुरोध किया कि वे महासभा के साथ लन्दन सभा को संबद्ध कर इस विषय में उचित निर्देश देने की कृपा करें।

ज्ञातव्य है कि लन्दन में पिछले साठ वर्षों से तेरापंथी परिवार प्रवासित हैं एवं धर्मसंघ के विभिन्न अवदानों के साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन कतिपय कारणों से अब तक लन्दन में सभा का गठन नहीं हो पाया था। महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ और उनकी टीम ने नई सभा के गठन की योजना के अन्तर्गत यह अभियान चलाया है कि जहां भी उचित संख्या में तेरापंथी परिवार प्रवासित हैं उन सभी स्थानों पर सभा का गठन किया जाए। इसी कड़ी में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लन्दन में सभा का गठन एक महत्वपूर्ण कदम है।

आचार्य महाप्रज्ञ के पांचवें महाप्रयाण दिवस का आयोजन

25 अप्रैल, 2014 को लंदन में आचार्य महाप्रज्ञ का पांचवां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी कांतिप्रज्ञा के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में लन्दन में प्रवासी तेरापंथी परिवारों के सदस्यों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में स्थानीय विशिष्ट कार्यकर्ताओं का परिचय कराते हुए समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के महान अवदानों का उल्लेख किया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने इस अवसर पर कहा कि प्रज्ञापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ भारतीय संत परंपरा के देदीप्यमान नक्षत्र थे। वे एक संत एवं अध्यात्मसिद्ध दार्शनिक के अतिरिक्त एक महान साहित्यकार भी थे। उनकी अहिंसा यात्राओं ने देश में शान्ति स्थापित करने में महनीय भूमिका निभाई थी।

उनकी प्रज्ञाप्रसूत रचनाओं से पूरा देश एवं समाज प्रभावित हुआ था। उन्होंने शिक्षा, साधना, संस्कृति एवं मानवता के विकास हेतु अनेक महत्वपूर्ण अभियान चलाए और देश एवं समाज को आध्यात्मिक वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने की महनीय चेष्टा की। श्री दुगड़ ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र के द्वारा अभूतपूर्व उच्चता अर्जित की थी और मानव से महामानव बने थे। उनके महाप्रयाण दिवस पर उन्हें स्मरण कर हम उनके महान अवदानों से खुद अपने जीवन को तथा राष्ट्र और समाज को भी समृद्ध-संबलित कर पाएंगे।

लंदन विश्वविद्यालय में आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान का आयोजन

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर लंदन विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित स्कूल ऑफ ओरिएंटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज में आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ. पीटर फ्लूगल ने कहा कि साधारणतया विश्वविद्यालय किसी व्यक्ति या संप्रदाय के प्रमुख पर व्याख्यान का आयोजन नहीं करता है लेकिन आचार्य तुलसी ने धर्म एवं संप्रदाय से ऊपर उठकर अपने अहिंसा, संयम एवं अनेकांतवाद के सिद्धांतों के माध्यम से तथा साहित्य के सृजन के द्वारा विश्व के जनकल्याण के लिए जो कार्य किया वे इतने अनुकरणीय हैं कि आज लंदन विश्वविद्यालय इनके जन्म शताब्दी वर्ष पर इस व्याख्यान का आयोजन कर सम्पूर्ण विश्व को उनके महान अवदान **अणुव्रत** के द्वारा विश्व में शांति की पुनर्स्थापना का संदेश देना चाहता है।

इस अवसर पर विशेष तौर से भारत से लंदन पधारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के शिष्टमंडल, जिसमें महासभा के अध्यक्ष एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के मुख्य संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़, उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया, महामंत्री श्री विनोद बैद, न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़, कार्यकारिणी सदस्य श्री हेमंत दुगड़ एवं श्री दिलीप सिंघवी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी कांतिप्रज्ञा के मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात श्रीमती शिवानी सेठिया एवं श्रीमतीअ ारतीभ ाडारीन ाअ ाचार्यत ुलसीद्व ारार चित' भावभ ीनी वंदना ..' गीतिका पर नृत्यमय प्रस्तुति द्वारा भावांजलि अर्पित की।

अपने अभिभाषण में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि भारत में समय-समय पर ऐसे संत महात्माओं ने जन्म लिया, जिन पर उस वक्त का काल अपनी छाप नहीं छोड़ पाया, बल्कि उन्होंने अपने कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व से काल के भाल पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए समाज, राष्ट्र तथा विश्व को मानव कल्याण का नया पथ प्रदर्शित किया, उनमें से एक महामानव थे आचार्य तुलसी। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से देश एवं राष्ट्र में नैतिकता को प्रतिष्ठित करने का महान अभियान प्रारंभ किया। उन्होंने हजारों मील की यात्रा कर पूरे देश में अणुव्रत की अलख जगाई और सर्वत्र शान्ति, अहिंसा, न्याय, प्रामाणिकता आदि के प्रति लोगों को जागरूक किया।

महसभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने उपस्थित श्रावक समाज को बताया किया कि महासभा ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह हेतु सर्वप्रथम भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के करकमलों द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह से संबंधित 'लोगो' का लोकार्पण करवाया तथा भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी के चित्र को शामिल कर सिक्के को जारी

करवाया है। इसके अतिरिक्त आचार्य तुलसी के गौतों की सौडी का निर्माण करवाया गया है और आचार्य तुलसी स्मृति ग्रंथ एवं एनिमेशन फिल्म का निर्माण आदि कार्य किए गए हैं। इसके साथ ही तुलसी वाङ्मय का प्रकाशन किया गया है, जिसमें उनके द्वारा रचित लगभग 108 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण शामिल है। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित करते हुए कई राज्यों ने कुछ रास्तों, गलियो, पार्कों, सार्वजनिक स्थानों का नामकरण उनके नाम पर किया है।

अध्यक्ष महोदय ने पूज्य प्रवर आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए बताया कि आचार्यश्री अपने साधु-साध्वियों के माध्यम से पूरे विश्व में अणुव्रत का संदेश फैला रहे हैं। महासभा पूज्य प्रवर के इंगित की आराधना करते हुए देश के चारों भागों में अणुव्रत संकल्प यात्रा का संचालन कर लोगों को अणुव्रत के नियमों के पालन हेतु प्रेरित कर रही है। इन रथ यात्राओं के माध्यम से लोगों से संकल्प पत्र भरवाए जा रहे हैं। अब तक लगभग 12 मिलियन (एक करोड़ बीस लाख) लोगों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे हैं, जो अपने आपमें एक उदाहरण है। इसके साथ ही आचार्य तुलसी द्वारा जन जागरण हेतु किए गए कार्यों को फिल्म के माध्यम से दिखाया जा रहा है, जिनमें समाज एवं राष्ट्र को प्रभावित करने वाले अनेक महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं। उन्होंने जानकारी दी कि अणुव्रत के प्रचार हेतु दिल्ली में 26-28 सितम्बर, 2014 को अणुव्रत अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा और विभिन्न विश्वविद्यालयों में आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि ये सभी कार्य तेरापंथ की कीर्ति पताका को शिखर तक पहुँचाएंगे और प्रवासी श्रावक समाज से आह्वान किया कि वे इन कार्यक्रमों से जुड़ें तथा कंधे से कंधा मिलाकर अपनी जय यात्रा को ध्येय सिद्धि के शिखर तक ले जाने में योगभूत बनें।

श्री कमल कुमार दुगड़ ने बताया कि शताब्दी वर्ष पर आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण के आध्यात्मिक दिशा निर्देशन में देश-विदेश में मानव हितार्थ अनेक कार्यक्रम किये जा रहे हैं जिनमें प्रमुख हैं आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा 100 श्रावक-श्राविकाओं को मुनि दीक्षा प्रदान करने की भावना। आचार्य श्री महाश्रमण ने इस शताब्दी वर्ष को व्यक्तित्व विकास वर्ष के रूप में घोषित किया है। उन्होंने उपस्थित सुधीजनों का आह्वान किया कि वे अणुव्रत आंदोलन के साथ

जुड़कर विश्व कल्याण हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा किए जा रहे भगीरथ प्रयास में सहयोग करें।

इस अवसर पर विश्व के जाने-माने पर्यावरणविद् डॉ. सतीश कुमार ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखते हुए कहा कि वे अपने आपको धन्य मानते हैं कि उन्हें इस व्याख्यान-कार्यक्रम में सहभागिता करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि अपने जीवन में आज जो कुछ भी वे कर पाये हैं उसका श्रेय आचार्य तुलसी को है। उन्होंने कहा कि जब वे 8 वर्ष के थे तो उनके पिता का देहांत हो गया था और उन्होंने उसी वर्ष जैन मुनि दीक्षा ग्रहण की तथा 9 वर्ष तक गुरुदेव श्री तुलसी के साथ मुनिचर्या का पालन किया। किन्तु विश्व को व्यापक स्तर पर जानने और समझने की उत्कंठा लिए वे आचार्य तुलसी का व्यक्तिगत साथ छोड़ दूरगामी भ्रमण पर निकल पड़े तथा पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं ईरान की धरती पर पदयात्रा करते हुए एक भिक्षु के रूप में आज से लगभग 42 वर्ष पूर्व ब्रिटेन पहुँचे एवं आचार्य तुलसी के आदर्शों तथा सिद्धांतों को अपने जीवन में कायम रखते हुए उसे सार्थक बनाने का प्रयास करते रहे। आज वे जो कुछ भी हैं, पूज्य गुरुदेव तुलसी के कारण ही हैं।

डॉ. सतीश कुमार ने कहा कि आचार्य तुलसी जिन सिद्धांतों को जन-जन में पहुँचाना चाहते थे उनको सर्वप्रथम उन्होंने अपने जीवन में स्वीकारा एवं उतारा। उनके तीन सिद्धांत पूरे विश्व को शांति एवं समृद्धि का मार्ग दिखा सकते हैं। वे सिद्धांत हैं - संयम, अहिंसा एवं अनेकांतवाद। आचार्य तुलसी लगभग एक लाख किलोमीटर से ऊपर की पदयात्रा करते हुए जीवन भर इन सिद्धांतों को जन-जन में प्रतिपादित करते रहे। डॉ. सतीश कुमार ने इस विषय में अपने अनुभवों को भी बताया। उन्होंने नारी शिक्षा एवं रूढ़िग्रस्त कुरीतियों को दूर करने की दिशा में आचार्य तुलसी द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की भी चर्चा की।

भारत से समागत जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की टीम ने अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में डॉ. सतीश कुमार का अभिनन्दन स्मृति चिह्न भेंट करके किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अतुल शाह ने लंदन विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम की सार्थकता बताते हुए कहा कि निश्चित ही आचार्य तुलसी के सिद्धान्तों से विद्यार्थियों एवं जन-जन के साथ भावी पीढ़ी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस आयोजन की सूत्रधार एवं पूर्ण रूपरेखा बनाने वाली समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज जो मैं समण व्रतों का पालन करती हुई भारत से दूर आपके समक्ष यहाँ खड़ी हूँ, यह आचार्य तुलसी की दूरगामी सोच का परिणाम है। आचार्यश्री ने साधु एवं श्रावक के बीच एक समण श्रेणी का निर्माण कर तेरापंथ धर्मसंघ का विस्तार पूरे विश्व में करने का स्तुत्य प्रयास किया। चूंकि जैन साधु-साध्वियाँ पदयात्री होते हैं और किसी प्रकार के वाहन का प्रयोग नहीं करते, अतः सुदूर विदेशों में जैन मुनि या साध्वियों का आना संभव नहीं है। आचार्य तुलसी ने विदेशों में प्रवासित जैन एवं अन्य समाज के हितार्थ समण श्रेणी को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनाया तथा जैन साधु-साध्वियों की शृंखला में इस समण श्रेणी का नियोजन किया जो यात्रा में उपयुक्त साधनों का उपयोग कर सभी स्थानों पर पहुंच रही है। उन्होंने आचार्य तुलसी के विभिन्न अवदानों की चर्चा करते हुए महासभा के शिष्टमंडल की लंदन यात्रा के कार्यक्रम एवं आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान में सहभागिता एवं सहयोग हेतु महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं उनकी पूरी टीम को साधुवाद दिया।

कार्यक्रम में ग्रेट ब्रिटेन की अनेक संस्थाओं के सदस्य, 'स्कूल ऑफ ओरिएंटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज' के प्राध्यापकगण, चीन से समागत बौद्ध भिक्षु, भारतीय दूतावास के राजनयिक श्री सुभाष चावला, लंदन विश्वविद्यालय के जैनोलॉजी के प्रतिनिधिगण, बरमिंघम जैन आश्रम, ब्रिटेन जैन समाज, ओसवाल एसोसियेशन, नवनत वणिक एसोसियेशन, भक्ति मंडल, जैन एसोसियेशन, नवयुवक प्रगति मंडल, जैन विश्व भारती - लंदन, यंग जैन्स - यू. के., श्रीमद् रायचन्द्र, यू. के., महावीर फाउण्डेशन, यू.के. तथा बुद्धिस्ट टेम्पल, यू. के. परिवार के सदस्यगण शामिल थे।

कार्यक्रम के सफल संचालन में लंदन प्रवासित श्री निर्मल बांठिया, श्री माणक चोरड़िया एवं श्री सुनील दुगड़ का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अतुल शाह ने किया।

इस कार्यक्रम का विस्तृत विवरण लंदन से प्रकाशित सभी समाचार पत्रों में, विशेषकर 'एशियन वायस', 'गुजरात समाचार' एवं 'एसओएएस स्पीरिट' में प्रमुखता से प्रकाशित हुए।

लंदन प्रवासी तेरापंथ समाज के अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्व

श्री निर्मल सेठिया का महासभा के पदाधिकारियों द्वारा सम्मान

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा की टीम ने विदेश की प्रथम ऐतिहासिक संगठन यात्रा के दौरान लंदन प्रवासी भारतीय मूल के अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्व श्री निर्मल सेठिया के साथ भेंट की। उल्लेखनीय है कि श्री निर्मल सेठिया सुविख्यात सेठिया परिवार के सदस्य और स्व. सोहनलाल जी सेठिया (सुजानगढ़-कोलकाता) के सुपुत्र हैं। सेठिया परिवार के कलकत्ता स्थित आवासीय स्थल 'सेठिया भवन' को कलकत्ता में तेरापंथ के प्रथम चारित्रात्मा चातुर्मास का गौरव प्राप्त है। श्री सोहनलाल जी सेठिया एक सफल उद्योगपति होने के साथ-साथ एक समाज हितैषी विशिष्ट व्यक्ति थे। वे आचार्य श्री तुलसी के अंतरंग और श्रद्धालु विशिष्ट व्यक्ति थे, जिनकी बातों को गुरुदेव बहुत महत्व देते थे। उन्होंने सन् 1966 में सुजानगढ़ में अपनी मातुश्री की स्मृति में

सोनादेवी सेठिया गर्ल्स कॉलेज की स्थापना की थी। उनके द्वारा स्थापित उस समूचे क्षेत्र में यह प्रथम कन्या महाविद्यालय है, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण और अद्वितीय कदम सिद्ध हुआ। यह भी एक विशिष्ट संयोग है कि श्री सोहनलाल सेठिया का भी इस समय जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है।

श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के शिष्टमंडल ने 25 अप्रैल, 2014 को लंदन में श्री निर्मल सेठिया के निवास पर उनसे शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर श्री दुगड़ ने संघ एवं समाज की प्रवर्धमान गतिविधियों के बारे में श्री सेठिया को विस्तार से अवगत कराया। श्री निर्मल सेठिया ने शिक्षा के महत्व एवं उसकी व्यापक उपयोगिता का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र में कुछ विशिष्ट कार्य करने की प्रेरणा दी तथा इस विषय पर प्रशिक्षणमूलक व्याख्यान, परिचर्चाएँ एवं संगोष्ठियाँ आयोजित करने का सुझाव दिया एवं इस विषय में अपेक्षित सहयोग का भी आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री निर्मल सेठिया ने जय तुलसी फाउंडेशन द्वारा प्रस्तावित आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल, सरदारशहर के अंतर्गत संचालित होने वाले मानव कल्याण के कार्यों को गति देने हेतु सेठ सोहनलाल मूलचंद सेठिया अक्षय निधि कोष के निर्माण का प्रस्ताव दिया और कहा कि महासभा इस विषय में विस्तृत योजना तैयार कर एन. सेठिया फाउंडेशन को विचारार्थ प्रस्तुत करे ताकि इस पर अपेक्षित कार्रवाई की जा सके।

ज्ञातव्य है कि स्वनामधन्य पिता के स्वनामधन्य पुत्र श्री निर्मल सेठिया उद्योग और व्यापार जगत में समाज के सफलतम व्यक्तियों में शीर्षस्थ स्थान पर हैं। 8 नवंबर, 1941 को कलकत्ता में जन्मे श्री सेठिया ने अपनी व्यापारिक सफलता के साथ-साथ सामाजिक और मानव कल्याणकारी कार्यों में उल्लेखनीय योगदान किया है। उनके द्वारा स्थापित '**एन. सेठिया फाउंडेशन एवं निर्मल सेठिया चैरिटेबल ट्रस्ट**' के माध्यम से काफी बड़ी राशि प्रतिवर्ष चैरिटी में नियोजित होती है, जिसके माध्यम से शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, धार्मिक गतिविधि, सामाजिक उत्थान, पर्यावरण सुरक्षा, सांस्कृतिक, सामाजिक उन्नयन एवं युवा कल्याण कार्य, आपदा सेवा जैसे मानव हितकारी कार्य किए जाते हैं। देश-विदेश में उनके फाउंडेशन द्वारा संचालित एवं सहायताप्राप्त संस्थानों की एक लंबी सूची है। उन्होंने अपनी दिवंगत पत्नी श्रीमती चित्रा सेठिया की स्मृति में '**चित्रा सेठिया सेंटर फॉर रोमेटिक्स एंड मिनिमल एक्सेस सर्जरी**' की स्थापना की है। वे पैतृक शहर सुजानगढ़ स्थित सोनादेवी सेठिया गर्ल्स कॉलेज के निरंतर विस्तार और

विकास हेतु भी समर्पित और जागरूक हैं।

अनेक राष्ट्रों के प्रमुख राष्ट्राध्यक्षों के सलाहकार की भूमिका में अपनी सेवाएँ देकर श्री सेठिया ने अपनी प्रतिभा, बौद्धिकक्षमता और अनुभव से विश्व क्षितिज पर अपनी छाप छोड़ी है। उनके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है उनका मातृभूमि प्रेम और तेरापंथ धर्मसंघ के विकास की बलवती भावना, जो उन्हें अन्यों में विशिष्ट बनाता है। सुदीर्घ विदेश प्रवास के बावजूद वे भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी आस्था और श्रद्धा भाव रखते हैं। संस्कृत श्लोक और हिंदी में सुभाषित तथा सूक्तियों को धाराप्रवाह बोलकर वे उपस्थित जनों को मंत्रमुग्ध करते हैं।

श्री सेठिया के व्यक्तित्व की प्रखरता, दूरदर्शिता, अन्तर्दृष्टि और करिश्माई कार्यकुशलता उन्हें समादरणीय बनाता है और मानव कल्याण के प्रति समर्पण, धर्म-अध्यात्म के प्रति अपरिसीम निष्ठा और भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग उन्हें अनुकरणीय बनाता है। उनका जीवन सबके लिए आदर्श एवं प्रेरणादायक है। श्री सेठिया तेरापंथ समाज के गौरवस्तंभ हैं और हमें इस बात का गर्व है कि वे हमारे समाज के सदस्य हैं।

महासभा के पदाधिकारियों की दिल्ली यात्रा : प्रवास व्यवस्था समिति से विचार-विमर्श

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के तीसरे एवं चतुर्थ चरण तथा पावस प्रवास में महासभा के प्रस्तावित आयोजन की व्यवस्थाओं के संदर्भ में महासभा का एक शिष्टमंडल महासभा अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों से विचार विमर्श करने हेतु 18 अप्रैल, 2014 को दिल्ली गया था, जिसमें श्री तुलसी कुमार दुगड़, श्री विनोद बैद तथा श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ भी शामिल थे।

18 अप्रैल, 2014 को एयरपोर्ट पर महासभा के प्रतिनिधियों की अगवानी करने हेतु दिल्ली सभा एवं प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जैन (पटावरी), श्री शान्तीलाल जैन, मंत्री प्रवास व्यवस्था समिति, श्री सुखराज सेठिया, मंत्री दिल्ली सभा एवं श्री गोविन्द भाफना, कार्यकारी अध्यक्ष, दिल्ली सभा उपस्थित थे। सभी ने आत्मीय भाव से एक दूसरे के प्रति प्रमोद भावना व्यक्त की।

वहाँ से शिष्टमंडल श्री कन्हैयालाल जैन (पटावरी) के फार्म हाउस गया, जहां पर प्रवास व्यवस्था के ई० व्यवस्थाओं से जुड़े अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। प्रवास व्यवस्था के पदाधिकारियों के साथ महासभा के शिष्टमंडल के सदस्यों ने अध्यात्म साधना केन्द्र के निर्माणाधीन भवन में प्रस्तावित आयोजनों के स्थानों का निरीक्षण किया। इसी समयावधि में प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत कार्यरत आवास व्यवस्था की देखरेख करने वाली बहनों का एक दल, जिसमें श्रीमती सुमन नाहटा एवं अन्य बहिनें शामिल थीं, प्रवास व्यवस्था समिति एवं महासभा के शिष्टमंडल के सदस्यों को लेकर आयोजनों में प्रस्तावित आवासीय स्थलों के निरीक्षण हेतु रवाना हो गया।

तत्पश्चात प्रस्तावित आयोजनों के संभागी कार्यकर्ताओं के आवास पर श्रीमती सुमन नाहटा के साथ विचार-विमर्श हुआ एवं संक्षिप्त समय में ही दोनों पक्षों ने एक दूसरे की बात को समझते हुए अपेक्षित व्यवस्थाओं के नियोजन हेतु सहमति एवं स्वीकृति व्यक्त की।

महासभा के शिष्टमंडल की 18 अप्रैल, 2014 की दिल्ली यात्रा में प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों के साथ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के अवशेष दो चरणों के प्रस्तावित आयोजन के स्थान एवं इस अवसर पर आमंत्रित किये जाने वाले विशिष्ट अतिथिवृन्द के नामों पर चर्चा की गई।

दोनों चरणों के आयोजन के अवसर पर प्रचार-प्रसार की अपेक्षाओं पर विचार-विमर्श हुआ।

इसके साथ ही आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के तृतीय एवं चतुर्थ चरण के आयोजनों में विशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित किये जाने पर भी चर्चा हुई। मुख्य संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ का सुझाव था कि तीसरे चरण के मुख्य कार्यक्रम हेतु भारत के उप राष्ट्रपति को एवं चतुर्थ चरण के मुख्य आयोजन हेतु भारत के महामहिम राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया जाना चाहिए एवं सप्ताहव्यापी कार्यक्रमों के लिए यथासंभव विशिष्ट सुधीजनों, जैसे दिल्ली के उपराज्यपाल/केन्द्रीय सरकार के मंत्री परिषद के सदस्य/अन्य देशों के राजदूत तथा राजनयिक/सांसद/विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा शैक्षणिक जगत से जुड़े बौद्धिक व्यक्तित्वों को भी निमंत्रित किया जा सकता है।

मुख्य संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ का सुझाव था कि हम सभी को इस अवसर पर कम से कम एक सौ सांसदों की उपस्थिति का प्रयास करना चाहिए एवं इस हेतु सभी उपस्थित जन अपने-अपने सम्पर्कों का उपयोग करते हुए सलक्ष्य प्रयास करें जिस पर सभी ने सहमति व्यक्त की।

इस अवसर पर प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों को पावस प्रवास में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर एक चित्र दीर्घा बनाकर उसमें चयनित चित्रों को प्रदर्शित करने के लिए उपयुक्त स्थान का निर्धारण करने हेतु अनुरोध किया गया, जिसपर प्रवास व्यवस्था के अध्यक्ष ने इन चित्रों को उपयुक्त साइज में तैयार करवाकर दूसरे तल पर अवस्थित प्रस्तावित लाइब्रेरी हॉल में प्रदर्शित करने का आश्वासन दिया।

उक्त अवसर पर आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के गीत-संगीत संगान कार्यक्रम की संयोजक श्रीमती सायर बैंगाणी भी वहां उपस्थित थीं। उनके साथ भारत के ख्यातिप्राप्त संगायकों द्वारा गाये गए गीतों की सीडी के लोकार्पण के कार्यक्रम को भी समारोहपूर्वक आयोजित किए जाने पर चर्चा की गई।

चुनाव शुद्धिकरण के संदर्भ में महासभा का प्रयास

तेरापंथ धर्मसंघ के युगप्रधान आचार्य राष्ट्रसंत तुलसी द्वारा देश एवं समाज में चारित्रिक उन्नयन हेतु प्रारंभ किए गए अणुव्रत आन्दोलन की वर्तमान समय में प्रबल प्रासंगिकता को देखते हुए महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ द्वारा 16वीं लोकसभा के चुनाव के अवसर पर आचार्य तुलसी द्वारा जारी आचार-संहिताओं और विद्यमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा इस अवसर पर देश के नाम जारी किए गए संदेश एवं लोकसभा के प्रत्याशी उम्मीदवारों से उन आचार संहिताओं के पालन हेतु गए अनुरोध की प्रति देश भर के सभी प्रत्याशियों के पास दिनांक 5 अप्रैल, 2014 को भेजी गई, जिसमें उम्मीदवारों से आग्रह किया गया कि वे उस आचार संहिता के पालन हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान करें ताकि भारतीय लोकतंत्र और भी सुदृढ़, सशक्त और गौरवशाली बने। प्रत्याशियों से निवेदन किया गया कि वे लोकसभा चुनाव में अणुव्रत आचार-संहिता का पालन कर गौरवशाली भारत के भविष्य को और भी सुनहरा बनाने में सहयोगी बनें।

भारतवासियों को इस बात का गौरव है कि उनके लोकतंत्र की परंपरा विश्व में सबसे प्राचीन है और वह पूरे विश्व की संसदीय व्यवस्था का संवाहक रहा है। भारत की लोकसभा संसार की सबसे बड़ी लोकसभा के रूप में प्रतिष्ठित है। अतीत में जन नेताओं में उसकी आत्मा की पवित्रता, नैतिकता और प्रजातंत्रात्मक पद्धति के प्रति निष्ठा अद्वितीय रही है।

चूंकि लोकतंत्र में चुनाव का बहुत महत्व है, क्योंकि वह यह एक ऐसी आधारशिला है जो संपूर्ण राष्ट्र रूपी भवन को स्थायित्व एवं भव्यता प्रदान करती है और लोकशक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करती है, अतः युगनायक आचार्य तुलसी द्वारा चुनाव के प्रत्याशियों और मतदाताओं के लिए निरूपित उन आचार संहिताओं का पालन बहुत ही आवश्यक है।

उक्त पत्र में इस बात पर जोर दिया गया कि यदि इस चुनाव के अवसर पर उन आचार संहिताओं का पालन किया जाए तो भारतीय लोकतंत्र और भी गौरवशाली और अनुकरणीय बन सकेगा।

महासभा के प्रयासों से बालेश्वर में नई सभा का गठन

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान नई सभा के गठन के क्रम में ओडीशा के बालेश्वर में महासभा की कार्यकारिणी के सदस्य श्री गुलाब भूरा और ओडीशा पूर्वी प्रभारी श्री मोहनलाल चोरड़िया की उपस्थिति में एक नई सभा का गठन किया गया और नए पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से मनोनयन किया गया। इस सभा का गठन महासभा द्वारा निर्धारित संविधान के आधार पर किया गया है, जिसके अधीन पंजीकरण हेतु सभा ने रजिस्ट्रार कार्यालय में आवेदन किया है। वर्तमान में सभा के अध्यक्ष के रूप में श्री संपतलाल सिंघी, मंत्री के रूप में श्री कनकमल धाड़ेवा, कोषाध्यक्ष के रूप में श्री विजयसिंह मालू तथा संयोजक के रूप में श्री राजकुमार सिंघी का चयन किया गया।

महासभा के तत्वावधान में शासनसेवी स्व. सिद्धराजजी भंडारी की स्मृति सभा

तेरापंथ समाज की गौरवमूर्ति जोधपुर निवासी एवं कोलकाता प्रवासी (वर्तमान में जयपुर प्रवासी) स्व. सिद्धराज जी भंडारी का दिनांक 16 अप्रैल, 2014 को संथारे के पश्चात देहावसान हो गया। सिद्धराज जी की विशिष्ट सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए महासभा द्वारा दिनांक 20 अप्रैल, 2014 को व्यापक स्तर पर स्मृति सभा का आयोजन महासभा भवन में किया गया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ की भावना थी कि कर्मठ एवं निष्ठाशील कार्यकर्ताओं की सेवाओं का मूल्यांकन करना समाज एवं संस्थाओं का धर्म है। इसी क्रम में उनकी पहल पर संघ की केन्द्रीय संस्थाओं ने पहली बार सार्थक कदम उठाकर कार्यकर्ताओं के श्रम-सिंचन को समाज के समक्ष एक अनुकरणीय कदम के रूप में प्रस्तुत किया है। महासभा के इस प्रयास की सभी ने भूरि-भूरि सराहना की।

स्मृति सभा में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, विकास परिषद के सदस्य श्री बनेचंद मालू, श्री बुद्धमल दुगड़, आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण रिसर्च एंड एजुकेशन फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र दुगड़, महासभा एवं जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री राजकरन सिरोहिया, अखिल भारतीय महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, जैन विश्व भारती के कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद बैद, जोधपुर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री गुलाबमल सिंघवी, महासभा के उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया, महामंत्री श्री विनोद बैद सहित समाज के अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर भंडारी जी के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने स्व. सिद्धराज जी भंडारी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उनकी महनीय सेवाओं का उल्लेख किया और कहा कि सिद्धराज जी भंडारी बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न व्यक्ति थे। उनमें बौद्धिक एवं प्रशासनिक क्षमता के साथ-साथ ज्ञान एवं दर्शन के क्षेत्र में अच्छी पहुँच थी। उनका तेरापंथ धर्मसंघ की विभिन्न गतिविधियों से बहुत गहरा जुड़ाव था। उन्होंने केन्द्रीय तथा स्थानीय स्तर की संस्थाओं के माध्यम से संघ एवं समाज को अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कीं और समाज की गौरव वृद्धि में अनवरत सक्रिय रहे।

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने आचार्यप्रवर श्री महाश्रमणजी द्वारा स्व. सिद्धराज जी भंडारी के लिए प्रदत्त संदेश का वाचन किया।

ज्ञातव्य है कि 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' बलवन्तराजजी भंडारी एवं 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' इचरजकंवर जी के सुपुत्र सिद्धराजजी भंडारी की प्रारंभिक शिक्षा जोधपुर में हुई। उसके बाद वे उच्च शिक्षा हेतु

कोलकाता आ गए जहाँ से उन्होंने बी.ए. आनर्स, एम. ए. तथा एलएल. बी. की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने उद्योगजगत में विभिन्न कंपनियों में उच्च पदस्थ पदाधिकारी के रूप में अच्छी ख्याति अर्जित की। वे एक कुशल प्रशासक के रूप में ख्यात थे। उन्होंने लगभग 80 देशों की यात्राएँ कीं। तेरापंथ धर्मसंघ एवं संघपति के प्रति उनकी असीम निष्ठा एवं समर्पण था। उनकी कार्यशैली एवं क्षमता को पहचान कर आचार्य तुलसी ने उन्हें विदेशों में समणीवृंद के कार्यों में सहयोग देने की आकांक्षा प्रकट की, जिसे अपना गौरव मानते हुए उन्होंने कई देशों में समणी केन्द्रों की स्थापना में सहयोग दिया। संघनिष्ठ कार्यकर्ता के रूप में जब भी उन्हें कोई दायित्व मिला, उसे उन्होंने पूरी श्रद्धा तथा समर्पण भाव से निभाया। वे दो वर्षों तक जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रहे और कुछ समय तक कुलाधिपति रहे। वे आचार्य श्री महाप्रज्ञ की ऐतिहासिक अहिंसा यात्रा के प्रथम संयोजक बने। उनकी संघीय सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें शासनसेवी संबोधन से अलंकृत किया।

स्व. भंडारी जी का पूरा परिवार तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति पूर्णतः समर्पित हैअ ेरस ंधीयए वंस ामाजिकक र्यकमों ि ागरूकताए वंस क्रियता के साथ सहभागिता करता है। उल्लेनीय है कि उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जतनबाई भंडारी को भी देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट निष्ठा तथा संघ एवं संघपति के प्रति उनके अपरिसीम समर्पण हेतु 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' तथा 'श्राविका गौरव' का संबोधन प्राप्त हो चुका है।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ द्वारा यह भावना व्यक्त की गई कि समाज के विशिष्ट कार्यकर्ताओं के संघीय एवं समाज हित में किए गए कार्यों का मूल्यांकन एवं उनका सम्मान सभी स्तरों पर हो। यह एक जागरूक समाज की पहचान है। इससे समाज में एक स्वस्थ परंपरा का निर्माण होता है। महासभा ने देश भर की सभी 512 तेरापंथी सभाओं को पत्र लिखकर उनसे अपेक्षा की कि वे स्व. भंडारी जी सेवाओं का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करें एवं दो मिनट का मौन रखते हुए शोक प्रस्ताव पारित करें।

स्मृति सभा का कुशलतापूर्वक संयोजन एवं संचालन महासभा के उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया ने किया।

इस संदर्भ में ज्ञातव्य है कि स्व. सिद्धराज जी भंडारी के अग्रज श्री बसंतराज भंडारी ने महासभा के इस प्रयास की हार्दिक सराहना की और एक पत्र लिखकर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। वह पत्र नीचे उद्धृत है :

27-04-14

Basant Raj Bhandari I.M.P.(Retd.)
Presently, Cancellor,
Jain Vishav Bharti Univrersity, Ladnun, Rajasthan.

My dear Kamalji,

Jai Jinendra. I returned to Geneva from Cincinnati, USA on 23rd April, 14 after attending last rites of my late younger brother Sidhraj Bhandari. My Kolkatta based brothers Birdhraj & Chanderraj briefed me of 'Smriti Sabha' organised by Terapanth Maha Sabha and other associated organisations in Kolkatta and also in other places to recall and remember dedicated services rendered by him in various capacities in different organistions of Terapanth Samaj.

As head of Bhandari family, I will like to convey our gratitude and gratefulness for the dignity, esteem and honour bestowed on the departed soul. This will give us courage and compassion to continue the mission and serve the samaj in the traditions of religious service set by our late parents. I will also request you to share our feelings and thoughts with related jain organistions. Please share our thoughts and submissions with all other organisations having organised such conclaves.

आचार्य महाप्रज्ञ के पंचम महाप्रयाण दिवस पर शांतिपीठ में धम्म जागरण का कार्यक्रम

आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल **"शांति पीठ"** में 25 अप्रैल को आचार्य महाप्रज्ञ के 5वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का श्रद्धामय कार्यक्रम आयोजित किया गया। अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के सद्प्रयासों से जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की ओर से आयोजित यह कार्यक्रम मुनिश्री सुमति

कुमारजी के सान्निध्य में सायं 7 बजे प्रारंभ हुआ। समारोह में विशिष्टअ तिथिके रू पमें अ णुव्रत विश्वभ ारतीके अ ध्यक्षश्री तेजकरण सुराणा उपस्थित थे। मंचस्थ महानुभावों में सरदारशहर के वरिष्ठ श्रावक श्री सुजानमल दुगड़, अमृतवाणी के निदेशक श्री जेसराज सेखानी एवं सरदारशहर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री मंगतमल दुगड़ शामिल थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मीनाक्षी भूतोड़िया द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम के संगान से हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद एवं कन्या मंडल, सरदारशहर के सदस्यों द्वारा गीतिका के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ को भावांजलि अर्पित की गई।

तेरापंथी सभा के मंत्री श्री कनक सेठिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष श्री अशोक लोढ़ा ने भी गीतिका के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। आयोजन के विशिष्ट अतिथि श्री तेजकरण सुराणा ने उद्‌गार व्यक्त करते हुए बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ की वाणी में साक्षात सरस्वती का वास था। मेरा परम सौभाग्य है कि उनके देवलोकगमन के पूर्व के तीन दिवसों में मुझेउ नकेस ान्निध्यमें रि हकरअ ाशीर्वादग्र हणक रनेक ाअ वसर प्राप्त हुआ। उन्होंने महासभा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि यह आयोजन हर वर्ष इसी तरह समायोजित किया जाता रहेगा।

कार्यक्रम में मुनिश्री आदित्य कुमार द्वारा "महाप्रज्ञजी की महिमा अपरम्पार" गीतिका की प्रस्तुति सबके लिए आकर्षण का विषय रही। आयोजन का प्रमुख आकर्षण संघ गायक श्री कमल सेठिया एवं मीनाक्षी भूतोड़िया के भजन रहे। मीनाक्षी भूतोड़िया ने "वाणी है कल्याणी जो जीवन महकाये ...", "म्हाने महाप्रज्ञ द्वारा प्यारो लागे..., तेरे अवदान ने भूले तेरे उपकार ने भूले..., आई आई भीतर..., ए दुनिया वालो सुन लो युगनायक की वह कहानी... तथा संघ गायक श्री कमल सेठिया ने देव तुम्हारा पुण्य नाम..., तुलसी पटधारी..., प्रज्ञा महापुरुष अवतारी..., दुनिया में पंथ अनेकों है, इस तेरापंथ का क्या कहना... आदि सुमधुर भजनों की सुर गंगा बहाते हुए उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर मुनिश्री सुमतिकुमारजी ने अपने उद्‌बोधन में उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ जैसा धर्मसंघ मिला एवं आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जैसे आचार्यों का सान्निध्य एवं आशीर्वाद हासिल हुआ। उन्होंने इंगित किया कि सरदारशहर में धर्मसंघ के सातवें आचार्य मघवा का स्मारक भी स्थित है, अतः हमारा परम दायित्व है कि वहां पर भी उनकी स्मृति में हम इस भांति का आयोजन प्रतिवर्ष आयोजित हो। मुनि सुमति कुमारजी ने इस आयोजन हेतु महासभा को साधुवाद दिया।

कार्यक्रम में समागत अतिथियों को महासभा द्वारा स्मृति चिह्न भेंट किया गया। सरदारशहर के वरिष्ठ श्रावक श्री सुजानमल दुगड़ ने कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री तेजकरण सुराणा को, श्री मंगतमल दुगड़ ने अमृत वाणी के श्री जेसराज सेखाणी को, महासभा की ओर से पधारे श्री अभय दुगड़ ने संघ गायक श्री कमल सेठिया एवं श्रीमती मीनाक्षी भूतोड़िया को स्मृति चिह्न भेंट किए। कार्यक्रम में सरदारशहर के श्रावक-श्राविका समाज के अलावा रतनगढ़, श्रीडूंगरगढ़, तारानगर व बीदासर से बसों द्वारा पधारे श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन महासभा के संगठन यात्रा प्रभारी श्री पन्नालाल पुगलिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में श्री जयकरण बच्छावत, श्री गौतम बोथरा एवं श्री अशोक दुगड़ का सराहनीय सहयोग रहा।

महासभा के तत्वावधान में उपासक श्रेणी द्वारा पूज्यप्रवर की मार्ग-सेवा-उपासना का विशेष उपक्रम

महासभा की प्रमुख प्रवृत्तियों में उपासक श्रेणी का विशेष महत्व है। पूज्यप्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए महासभा इस श्रेणी के विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है और उपासक-उपासिकाएँ अपनी अन्यतम सेवाओं द्वारा समाज के आध्यात्मिक विकास में सहयोगक रर हेहैं ।उ पासकश्रे णीप र्युषण र्वप र्रा वशेषरू पसे विभिन्न क्षेत्रों में जाकर अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ देती है।

महासभा के तत्वावधान में इस बार उपासक श्रेणी ने पूज्यप्रवर की मार्ग-सेवा-उपासना का एक विशेष उपक्रम प्रारंभ किया। महासभा की ओर से उपासक-शिविर व्यवस्था प्रभारी श्री विनोद बाँठिया, सूरत ने पूज्यप्रवर से उपासक-उपासिकाओं द्वारा मार्ग-सेवाक रनेहे तुअ नुमतिदे नेक ॥ नवेदनी कयाअ ौरप ूज्यप्रवरने ो महती कृपा कर इसकी स्वीकृति प्रदान की। इसके फलस्वरूप सेवा-उपासना का क्रम गत 13 फरवरी, 2014 को गंगाशहर से प्रारंभ हुआ और 5 अप्रैल, 2014 को कालांवली में संपन्न हुआ। इस प्रकार लगातार 52 दिनों तक यह क्रम चला। लगभग 15 की संख्या में उपासक-उपासिकाओं के समूह आते थे और पाँच दिनों तक पूज्य प्रवर की सेवा-उपासना करते थे। पाँच दिनों के बाद उपासकों का दूसरा समूह आ जाता था। कुल 180 उपासक-उपासिकाओं ने इस मार्ग-सेवा-उपासना का लाभ लिया, जिसमें 82 उपासक भाई और 98 उपासिका बहनें थीं।

पूज्य गुरुदेव ने महती कृपा करके प्रत्येक समूह को सेवा-उपासना का अलग से समय प्रदान किया। आपश्री समय-समय पर अपने प्रवचनों में उपासक श्रेणी के बारे में प्रासंगिक रूप से फरमाया करते थे। उपासकों द्वारा पूज्यप्रवर की मार्ग-सेवा-उपासना का यह कार्यक्रम विभिन्न दृष्टियों से अत्यन्त उपयोगी रहा। उपासकों को पूज्य गुरुदेव और चारित्रात्माओं के दर्शन, सेवा, प्रवचन-श्रवण और गोचरी का लाभ प्राप्त हुआ, साथ ही उन्हें मध्याह्नकालीन प्रशिक्षण भी प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के कार्य में चारित्रात्माओं के अतिरिक्त उपासक श्रेणी के संयोजक श्री डालिमचंद नौलखा, श्री निर्मल नौलखा, श्री सुरेन्द्र सेठिया, श्री विजयराज संकलेचा, श्री सचिन कांसवा, श्री चांद छाजेड़ आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस कार्यक्रम के व्यवस्थित संचालन हेतु श्री सुरेन्द्र सेठिया, कोलकाता को यात्रा-संयोजक तथा सहयोगी के रूप में श्री फूलचंद छत्रावत (सूरत), श्री राजकुमार जैन (दिल्ली), श्री रतन सिंयाल (मुंबई), श्रीमती विमला कोठारी (गदग) को नियुक्त किया गया था। श्री विनोद बाँठिया (सूरत) और उनके परिवार के सदस्यों ने पूरी श्रद्धा एवं निष्ठा भावना के साथ इस कार्य में अपने श्रम का नियोजन किया।

श्रद्धास्पद मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी, साध्वीश्री जिनप्रभाजी का चिंतन और मार्गदर्शन विशेष रूप से प्राप्त हुआ।

अजमान (संयुक्त अरब अमीरात) में धर्मोपासना की धूम

महासभाके ए की शष्टमंडलक ाअ ध्यक्षश्री कि मलकु मारद ुगड़के ने तृत्वम ेंप थमब ारवि देशम ेंस ंगठनय ात्राहे तुअ ागमन हुआ। इस अवसर पर दुबई में लगभग सभी खाड़ी देशों के प्रतिनिधि महासभा अध्यक्ष से विचार-विमर्श हेतु उपस्थित थे।

दुबई से चालीस किलोमीटर दूर स्थित छोटे से देश अजमान में गत वर्ष की आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी श्री दिनेश कोठारी ने महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवम् अन्य पदाधिकारियों को प्रस्तुत की। इस आलोच्य वर्ष में वहां 155 उपवास, 18 बेला, 7 पौषध तथा 500 सामायिक की उपासना के साथ दिवाली को चौबीस घंटे के अखण्ड जाप का भी आयोजन किया गया।

महासभा अजमान में प्रवासित सभी जैन परिवारों की धर्मोपासना की अनुमोदना करती है। आशा है भविष्य में अजमान का प्रवासी समाज अपने संस्कारों को अक्षुण्ण रखते हुए संघीय गतिविधियों को प्रवर्द्धमान रखने हेतु अपने श्रम का सार्थक नियोजन करेगा।

दिल्ली में संभावित कार्यक्रमों की सूची प्रस्तावित तिथियों के साथ

क्रम सं.	कार्यक्रम	दिनांक
1	महासभा की असाधारण सभा	28 जून 2014
2	ज्ञानशाला त्रिदिवसीय प्रशिक्षक केन्द्रीय शिविर	12 से 14 जुलाई 2014
3	ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक-सह-संयोजक आंचलिक संयोजक व विभागीय संयोजक कार्यशाला	13 जुलाई 2014
4	उपासक प्रशिक्षण शिविर	16 से 26 जुलाई 2014
5	तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन	01 से 03 अगस्त 2014
6	अणुव्रत संकल्प रथ यात्रा प्रस्तुति समारोह	03 अगस्त, 2014
7	मेधावी छात्र प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह	15 से 16 अगस्त 2014

महासभा को अहिंसा यात्रा की व्यवस्था का दायित्व

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण दिल्ली चातुर्मास की सम्पन्नता के उपरान्त सुदूर क्षेत्रों की यात्रा हेतु आगामी 09 नवम्बर 2014, तदनुसार मृगसर कृष्णा तृतीया वि.सं. 2071 को प्रस्थान करेंगे। पूज्यप्रवर की इस यात्रा को अहिंसा यात्रा का नाम दिया गया है।

इस यात्रा की व्यवस्था का गुरुतर दायित्व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को प्रदान किया गया है एवं इसके संयोजक महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ मनोनीत किए गए हैं। सार्वजनिक दृष्टि से इस यात्रा में तीन कार्य प्रस्तावित हैं।

- सद्भावना का प्रसार
- नैतिकता का प्रचार-प्रसार
- नशामुक्ति अभियान

महासभा परिवार इस दायित्व को पाकर गौरव की अनुभूति कर रहा है एवं पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह हेतु कृतज्ञता के भाव अर्पित करता है।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 5 रुपये के सिक्के का निर्गमन

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी को समर्पित 20 रुपये एवं 5 रुपये के सिक्कों का लोकार्पण केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री पी. चिदम्बरम द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में दिनांक 4 फरवरी, 2014 को किया गया था।

भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी प्रेस सूचना 2013-14/1971 दिनांक 4 अप्रैल, 2014 के द्वारा यह सूचित किया है कि 'पांच रुपये का सिक्का चलन हेतु शीघ्र जारी किया जाएगा, जिसके डिजाइन, आकार आदि के बारे में विस्तृत विवरण भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग द्वारा प्रकाशित भारत के राजपत्र – *असाधारण – भाग - 2, खंड 3, उपखंड - (i), निर्गमन सं. 606 दिनांक 18 दिसंबर, 2013* में अधिसूचित किया गया था।

यह सिक्का भारत सरकार के **सिक्का अधिनियम, 2011** में किए गए प्रावधान के अनुसार वैध मुद्रा माना जाएगा।'

ज्ञातव्य है कि मुंबई टकसाल द्वारा निर्मित इस सिक्के के एक ओर आचार्य तुलसी का चित्र तथा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष 1914-2014 उत्कीर्ण है। ये सिक्के भारतीय रिजर्व बैंक की सभी शाखाओं में प्रचलन हेतु उपलब्ध हैं। सिक्कों को क्रय करने के इच्छुक व्यक्ति अपने निकटस्थ रिजर्व बैंक की शाखा से संपर्क कर सकते हैं।

कमल कुमार दुगड़
मुख्य संयोजक
आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति

[illegible]
1-2-3 [illegible], 2014, [illegible]

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन दिनांक 1-2-3 अगस्त, 2014 को आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित होगा। इस अवसर पर श्रद्धेय आचार्य प्रवर का विशेष उद्बोधन एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा, जो सभाओं के संचालन में प्रेरणा का हेतु बनेगा। सम्मेलन में सभा के अध्यक्ष अथवा मंत्री की उपस्थिति अनिवार्य है। पंजीकरण परिपत्र सभी सभाओं को प्रेषित किया जा रहा है।

सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने हेतु सभी एफिलिएटेड सभाओं को सभा विवरण परिपत्र प्रेषित किए जा रहे हैं। ज्ञातव्य है कि इस परिपत्र के आधार पर श्रेष्ठ एवं विशिष्ट सभा का चयन भी किया जाएगा। अत: इसे विधिवत भरकर यथाशीघ्र महासभा के कार्यालय के पते पर भेजने की व्यवस्था करें।

बिनोद बैद
महामंत्री

सभा संवाद

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता

महावीर जयन्ती का भव्य आयोजन

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथीस भा,क ोलकाताके त त्वावधानमें म हासभाके वि शाल हॉल में महावीर जयन्ती का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अहिंसा रैली से हुआ। भव्य झांकियों से सुसज्जित मनोरम अहिंसा रैली उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, हरियाणा भवन तथा मित्र परिषद से प्रारंभ होकर बृहत्तर कोलकाता की चारों दिशाओं का स्पर्श करती हुई कलाकार स्ट्रीट में एकत्रित हुई। उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, पूर्वांचल, लिलुआ आदि की ज्ञानशालाओं के बच्चों द्वारा भगवान महावीर के जीवन-दर्शन को प्रस्तुत करती हुई झांकियाँ स्थानीय सभाओं, महिला मंडल की सदस्याओं तथा ज्ञानशाला के बच्चों की श्रद्धा एवं श्रम को मुखरित कर रही थी। इस रैली में कन्या मंडल, महिला मंडल, युवक परिषद, श्रावक समाज गणवेश में उपस्थित था। हर क्षेत्र की भजन मंडलियाँ सुमधुर भजनों की स्वरलहरी प्रस्तुत कर रही थीं। पूरा वातावरण महावीरमय बना हुआ था। भगवान के जयनारों से दिशाओं को गुंजायमान करने वाला विशाल जुलूस महासभा भवन में धर्मसभा के रूप में परिणत हो गया।

इस गरिमामय कार्यक्रम में सांसद श्री सुदीप वंद्योपाध्याय, विधायक श्री तापस राय, महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, महामंत्री श्री विनोद बैद, विकास परिषद के सदस्य श्री बुधमलजी दुगड़, श्री बनेचंद मालू, कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री अमरचंद दुगड़, अ.भा.ते. महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, जय तुलसी फाउंडेशन के प्रधान न्यासी श्री सुरेन्द्र दुगड़, महासभा के न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ आदि अनेक स्थानीय सभा-संस्थाओं के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपना श्रद्धासिक्त उद्बोधन प्रदान करते हुए भगवान महावीर के जीवन-दर्शन को उद्घाटित किया तथा उनके सिद्धांतों को जीवन में अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर का जीवन सागर-सा महान था और यदि हम उस सिंधु के एक बिंदु को भी निकाल पाएँ तो महावीर जयन्ती मनाना सार्थक हो जाएगा। साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि महावीर जयन्ती मनाकर हम सत्य, अहिंसा, शान्ति, अपरिग्रह, अनेकांत, वीतराग चेतना आदि को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लेते हैं। हमें महावीर के उपदेशों को स्वीकार कर जीवन की समस्याओं के समाधान का प्रयास करना चाहिए।

सांसद श्री सुदीप वंद्योपाध्याय ने भगवान महावीर के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए उन्हें शान्ति का अवतार बताया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने ओजस्वी अभिभाषण में महावीर जयन्ती के महत्व को रेखांकित करते हुए भगवान महावीर के जीवन-दर्शन को विश्लेषित किया। उन्होंने वर्तमान युग की विसंगतियों को दूर करने में भगवान महावीर के सिद्धांतों की महनीय भूमिका का उल्लेख किया और कहा कि हिंसा, जातिवाद, मूल्यहीनता, अप्रमाणिकता आदि को दूर करने हेतु भगवान महावीर द्वारा दिखाए दिशा-पथ पर अग्रसर होना अति आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आज का दिन आत्मविश्लेषण का दिन है। महावीर के उपदेशों को भाषणों में नहीं दिल में लिखने की जरूरत है। महावीर ने आत्म विजय के मार्ग को प्रशस्त करते हुए संदेश दिया कि तुम्हें लड़ना ही है तो अपने

विकारों से लड़ो, अगर विजेता बनना है तो खुद को जीतो। उनका करुणा से परिपुष्ट अहिंसा का भाव उस चरम कोटि तक पहुँच गया था जहां आजन्म विरोधी जीव-जन्तु भी अपना जन्मजात वैरभाव भूलकर सहचर की तरह एक घाट पर पानी पीते थे।

श्रीद ुगड़न ेआ जके य ुगम ेंम हावीरके स िद्धांतोंक ेप ्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंसा और आतंकवाद से आज पूरा विश्व प्रभावित है, ऐसे में महावीर की शिक्षाएँ विशेष महत्व रखती हैं, क्योंकि उन्होंने कहा कि हिंसा और अहिंसा के बीज हमारे मस्तिष्क में मौजूद होते हैं। यूनेस्को के साहित्य में है कि युद्ध मैदान में बाद में लड़े जाते हैं, पहले मनुष्य के मस्तिष्क में पैदा होते हैं। जैनश वेताम्बरत ेरापंथध र्मसंघके द शमअ धिशास्ताअ हिंसाप ाथ के महापथिक आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा है कि हमारी शिक्षा पद्धति केवल हमारे मस्तिष्क के बायें गोलार्ध को जाग्रत कर रही है, जो बुद्धि, गणित एवं तर्क को उत्प्रेरित करता है, जबकि दाहिना गोलार्ध आध्यात्मिक विकास तथा धार्मिक ज्ञान के लिए है। यह गोलार्ध सुप्तावस्था में ही रह जाता है, जिसे जाग्रत करने की आज महती आवश्यकता है।

श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि जब तक हम मानसिक हिंसा, वैचारिक हिंसा, भावनात्मक हिंसा एवं शाब्दिक हिंसा से स्वयं को अलग नहीं करेंगे तब तक हम भगवान महावीर की परंपरा में सही मायने में जैन नहीं बन पाएंगे। भगवान महावीर की जयन्ती मनाने की सार्थकता इसी में है कि हम अपने अंतर्घट में ज्ञानदीप प्रज्वलित करें और महावीर के पथ पर अग्रसर हों।

विधायक श्री तापस राय ने भी भगवान महावीर के प्रति अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति प्रकट की। इसके साथ ही श्री बनेचंद मालू, महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद, कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री अमरचंद दुगड़, जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र दुगड़, श्रीमती शान्ता पुगलिया आदि ने भी अपने भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति दी।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं महामंत्री श्री विनोद बैद ने इस अवसर पर साध्वीश्रीजी को 'शान्ति पीठ' नामक पुस्तक की प्रतियाँ भेंट की, जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल के निर्माण के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है।

कार्यक्रमके अ तम ेंरै लीए वंझ ांकियोंक ेग ुणवत्ताके न िर्णायक श्री भंवरलाल सिंघी ने सभी झाँकियों की सराहना करते हुए पूर्वांचलक ेप ्रथमअ ौरद क्षिणक ोलकाताव ्याप ारस हायक ोद्वितीय स्थान प्रदान किया।

पूरे कार्यक्रम का संचालन कोलकाता सभा के मंत्री श्री विमल बैद ने कुशलतापूर्वक किया।

लिलुआ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा
महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रभात फेरी

लिलुआ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा महावीर जयन्ती के पावनअ वसरप ररवि वार,द िनांक1 3अ प्रैल,2 014क ोप ्रात: 6.30 बजे प्रभात फेरी निकाली गई, जो क्षेत्र के विभिन्न मार्गों का परिभ्रमण करती हुई लिलुआ सभा भवन में विसर्जित हुई। गणवेश में सुसज्जित श्रावक-श्राविकाओं की टोली ने महावीर के जय-जयकार से पूरे वातावरण को गुंजायमान कर महावीर के सत्य, अहिंसा, शान्ति एवं सौहार्द्र के सिद्धांतों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने में महनीय भूमिका निभाई।

इसके पश्चात लिलुआ सभा क्षेत्र के श्रावक समाज ने अपनी सभा के बैनर के साथ भगवान महावीर से संबंधित झाँकियों एवं भजन मंडलियों से सुसज्जित अहिंसा रैली में भाग लिया और उनकी रैलीव िभिन्नक ्षेत्रोंस ेग ुजरतीह ुईह ावड़ाप ुल,स ्ट्रैंडर ोड,म हात्मा गांधी रोड आदि से होती हुई महासभा भवन पहुँची जहाँ साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजित भगवान महावीर जयन्ती के कार्यक्रम में शामिल हुई।

भिक्षु धम्मजागरण का कार्यक्रम

लिलुआ सभा द्वारा रविवार, दिनांक 13 अप्रैल, 2014 को रात्रि 7.30 बजे सुदी तेरस के अवसर पर लिलुआ तेरापंथ भवन में भिक्षु धम्मजागरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभा के अध्यक्ष श्री अभय कुमार बरड़िया, मंत्री श्री प्रशांत लुणिया एवं सभा के अन्य पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में इस क्षेत्र के श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से सहभागिता कर पुण्यार्जन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत

भगवती दीक्षा का भव्य आयोजन

आचार्य श्री महाश्रमणजी के आदेशानुसार साध्वीश्री कैलासवतीजी नेट ापरा(राजस्थान)ि नवासीए वंस ूरतप् ावासीस ुश्राविका' श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' श्रीमती सुआदेवी संकलेचा को 97वें वर्ष की आयु में उनकी आध्यात्मिक आरोहण की भावना को स्वीकार करते हुए संथारे के साथ दीक्षा प्रदान की। दीक्षोपरांत सुश्राविका बनीं साध्वी सौम्यमूर्ति। दीक्षा अंगीकार होने के बाद साध्वीश्री सौम्यमूर्ति को तिविहार संथारे का पचक्खाण करवाया गया। उल्लेखनीय है कि श्रीमती सुआदेवी तेरापंथ धर्मसंघ के मुनिश्री दिनेशकुमारजी की संसारपक्षीया मातुश्री हैं। इस अवसर पर पूज्य आचार्य प्रवर ने अपने पावन संदेश में कहा कि "मनुष्य जीवन मिलना महत्वपूर्ण है। लेकिन उसके साथ आध्यात्मिक श्रद्धा, धर्मवाणी का श्रवण और संयम मार्ग का अनुसरण होना दुर्लभ माना गया है। अनशन और दीक्षा दोनों मार्गों का एक साथ अनुसरण होना यह विशेष पराक्रम की बात है। श्रीमती सुआदेवी हमारे धर्मसंघ के परम विनीत संत मुनि श्री दिनेशकुमारजी की संसारपक्षीय मातुश्री हैं। वे प्रकृति से अत्यन्त सौम्य हैं। और इसीलिए हमने उन्हें सौम्यमूर्ति संबोधन से भीस ंबोधितत कयाहै ।अ ाजस ाध्वीश ्रीकै लासवतीजीद ्वाराद ीक्षा प्रदान किए जाने पर उन्हें मैं 'साध्वी सौम्यमूर्ति' नामकरण प्रदान करता हूँ। हमने कभी सोचा भी नहीं था किन्तु सूरत नगरी को सहज रूप से एक सुंदर संयोग प्राप्त हो गया है। अब साध्वी श्री कैलासवतीजी एवं उनकी सहवर्ती साध्वियाँ नवदीक्षित साध्वीजी की बहुत अच्छी तरह से सेवा करें और उनकी चित्त समाधि एवं साधना में सहयोग प्रदान करें। मैं नवदीक्षित साध्वीजी के लिए मंगलकामना प्रेषित करता हूँ।"

साध्वी श्री कैलासवती जी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में 100 दीक्षाएँ प्रदान करने का जो महासंकल्प लिया है उसमें साध्वी श्री सौम्यमूर्ति जी ने अपना नामअ ंकितक रवा ादयाहै ।म ुनिश्रीद िनेशकुमारजीन ेभ ीअ पने संदेश में कहा कि 'मेरी संसारपक्षीय मातुश्री ने संथारे के साथ दीक्षाग ्रहणक रस ंकलेचाप ारिवारके ग ौरवक ोब ढ़ायाहै ।' इस अवसर पर उपस्थित सभी साध्वियों, समणियों ने प्रेरक प्रवचन एवं मधुर गीतों का संगान किया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री चंपकभाई मेहता ने आज्ञापत्र का वाचन किया, सूरत सभा के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री बाबूलाल भोगर ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया, नवदीक्षित साध्वी के संसारपक्षीय ज्येष्ठ पुत्र श्री मोहनलाल संकलेचा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। तेरापंथ सभा सूरत के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल संकलेचा, उधना सभा के अध्यक्ष श्री जयसिंह रांका एवं बारडोली केअ ध्यक्षश ्रीस ुजानसिंहम ेहता,अ णुव्रतम हासमितिके र ाष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री श्री अर्जुन मेड़तवाल एवं अन्य सुधी व्यक्तियों ने अपनी भावाभिव्यक्ति की। कार्यक्रम का कुशल संचालन सूरत सभा के मंत्री श्री संजय बैंगानी ने किया।

साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता

संघ प्रभावना का भव्य कार्यक्रम

आचार्य श्री महाश्रमणजी के आदेशानुसार साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने तारानगर निवासी एवं कोलकाता प्रवासी श्राविका श्रीमती भंवरीदेवी लुणिया को इक्यानवे वर्ष की अवस्था में तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। बहन ने पूर्ण जागरूकता, सजगता, सचेतनता तथा सुदृढ़ मनोबल के साथ बैठकर साध्वीश्रीजी से सात दिनों की तपस्या में यावज्जीवन के लिए तिविहार संथारा स्वीकार किया। कुबेर-गार्डन, कोलकाता में आयोजित संघ प्रभावना के इस भव्य कार्यक्रम में अनेक केंद्रीय सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ-साथ कोलकाता तेरापंथ समाज के बहुसंख्यक श्रद्धालु भाई-बहन उपस्थित थे।

साध्वीश्री अणिमाश्री जी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा कि

भीतर की जिजीविषा को जीतकर आसक्ति के दलदल से ऊपर उठकर अनासक्ति को चिरस्थायी बनाने वाली भव्यात्मा ही इस दुष्कर पथ का वरण कर सकती है और यह कार्य किया है दृढ़ मनोबली श्राविका भंवरी देवी लुणिया ने। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि जैन आगमों में जीने की कला के साथ मरण की कला का भी विवेचन हुआ है, जिसमें एक समय के बाद शरीर की मोहासक्ति से ऊपर उठकर मरण की दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई है। उन्होंने कहा कि एक महीने पहले श्रीमती हेमलता पुगलिया संथारे में दीक्षा स्वीकार कर साध्वी हिम्मतयशा बनी और अब श्रीमती भंवरी देवी लुणिया सिंहवृत्ति के साथ अनशन स्वीकार कर नए इतिहास का सृजन करने जा रही हैं। इन दोनों ही श्राविकाओं ने अद्भुत साहस का परिचय दिया है और तेरापंथ धर्मसंघ का मान वर्धित किया है।

इस अवसर पर महासभा के उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया, अखिल भारतीय महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष श्री प्रताप दुगड़, साउथ कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

ज्ञातव्य है कि सुश्राविका स्व. भंवरीदेवी लुणिया का इक्यानवे वर्ष की अवस्था में तिविहार संथारे के पश्चात 19 अप्रैल, 2014 को देवलोकगमन हो गया। उनकी स्मृति सभा का आयोजन 20 अप्रैल, 2014 को महासभा भवन में किया गया, जिसमें समाज की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने सहभागिता कर उन्हें अपनी भावांजलि अर्पित की।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुलाबबाग

मुमुक्षु नमन डागा का मंगल भावना समारोह

तेरापंथी सभा, गुलाबबाग द्वारा दिनांक 07 अप्रैल, 2014 को समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञाजी तथा समणी मानसप्रज्ञाजी के सान्निध्य में भावी महाव्रती मुमुक्षु नमन डागा का मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में फारबिसगंज, भागलपुर, दलखोला, कलियागंज, किशनगंज, अररिया, खुश्कीबाग, भट्ठाबाजार, कटिहार आदि करीब पंद्रह क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के पूर्व नमन डागा को लेकर एक रैली निकाली गई, जिसमें सरस्वती विद्या मंदिर के विद्यार्थी बैंड बाजे के साथ शामिल हुए। सभाध्यक्ष श्री नेमिचंद बैद ने अभ्यागतों का स्वागत करते हुए वैरागी के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। मुमुक्षु नमन के दादाश्री श्री भंवरलाल डागा, पिता श्री जुगराज डागा, बुआ श्रीमती कंचनदेवी ने अपने लाडले के साहस की सराहना की तथा धर्मपथ पर सुदृढ़ भाव से निरंतर बढ़ते रहने की मंगल कामना की।

महासभा के उपाध्यक्ष का अभिनन्दन

महासभा के उपाध्यक्ष के रूप में नया दायित्व ग्रहण करने पर फारबिसगंज के सुप्रसिद्ध श्रावक श्री अनूप कुमार बोथरा का स्थानीय सभा तथा श्रावक समाज द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर श्री बोथरा ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे संघ एवं समाज की सेवा का अवसर मिला है। मैं पूज्य प्रवर के अनुग्रह की कामना करते हुए संघ एवं समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाने की कोशिश करूंगा।

महावीर जयन्ती के अवसर पर भव्य शोभा यात्रा

गुलाबबाग सभा के तत्वावधान में दिनांक 13 अप्रैल, 2014 को महावीर जयन्ती समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ भव्य शोभा यात्रा से हुआ, जिसमें गुलाबबाग सभा के अतिरिक्त महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल के सदस्य और अन्य अनेक जैन-अजैन लोगों ने सहभागिता की। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा विभिन्न झांकियाँ निकाली गईं, जिनमें भगवान के जन्मोत्सव, साधना काल तथा ग्वाले द्वारा भगवान के कानों में गरम शीशा डालने की झांकी अत्यन्त लोमहर्षक थी। शोभा यात्रा नगर का भ्रमण करते हुए स्थानीय सभा भवन में पहुँची और वहां सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। कार्यक्रम का प्रारंभ कन्या मंडल की बहनों द्वारा किए गए मंगलाचरण से हुआ। सभा के अध्यक्ष श्री नेमचंद बैद ने भगवान महावीर के जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला। महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती चंदा दुगड़ एवं युवक परिषद के अध्यक्ष श्री चंदन डागा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर शिशु संस्कार बोध के भाग 1 से लेकर 5 के आधार पर जिन बच्चों ने परीक्षाएँ दीं और उनमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किए उन्हें सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही सभा ने उन बच्चों को भी पुरस्कृत किया, जिन्होंने

भगवान महावीर की झांकी में भाग लिया था।

धन्यवाद ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष श्री चांदरतन संचेती तथा कार्यक्रम का सफल संचालन सभा के सहमंत्री श्री पंकज डागा ने किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम के तहत प्रज्ञा सभागार में भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें भगवान महावीर पर आधारित गीतों का सुमधुर गायन प्रस्तुत किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त मनोहारी एवं श्रद्धा-भक्ति से आपूरित था।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुंबई

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुंबई के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह रविवार को तेरापंथ भवन, कांदिवली में संपन्न हुआ। सभा के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री विनोद कच्छारा एवं उनकी टीम को श्री रमेश धाकड़ तथा श्री बाबूलाल कच्छारा ने पद की गोपनीयता तथा उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु शपथ दिलाई। श्री विनोद कच्छारा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि मुंबई के श्रावक समाज ने उनके प्रति जो विश्वास व्यक्त किया है उसे वे बनाए रखेंगे और संस्था को नई ऊंचाइयों की ओर ले जाने हेतु हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने नव मनोनीत 450 सदस्यीय विशाल मंत्रिमंडल की घोषणा की, जिसमें महानगर के 85 उपनगरों को प्रतिनिधित्व दिया गया। सभा के पदाधिकारियों में नए कार्यकर्ताओं को समाज की सेवा का अवसर प्रदान किया गया। सभा के मंत्री के रूप में श्री निर्मल कुमठ का चयन किया गया।

समाज के विकास तथा धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गतिविधियों के प्रसार हेतु विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन किया गया। सभा द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कार्य के विस्तार हेतु सोशल मीडिया, जन संपर्क, बुद्धिजीवी, कंप्यूटर, प्रेक्षाध्यान, मेडिकल, जीवन विज्ञान, ज्ञानशाला, जैन विद्या, अणुव्रत, अहिंसा समवाय मंच, कन्या मंडल, किशोर मंडल, युवक-युवती परिचय प्रकोष्ठ आदि का गठन किया गया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मदुरै

महावीर जयन्ती का आयोजन

मदुरै तेरापंथ भवन में दिनांक 13 अप्रैल, 2014 को साध्वीश्री डॉ. पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में महावीर जयन्ती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त का सिद्धांत देने वाले भगवान महावीर के जीवन दर्शन को अपनाने और अपना आत्मविश्लेषण करते हुए जीवन को अध्यात्म एवं संयम की ओर मोड़ने का संदेश दिया। उन्होंने आचार्य महाश्रमण द्वारा चलाए जा रहे नशामुक्ति अभियान का उल्लेख किया और कहा कि मदुरै का प्रत्येक तेरापंथी परिवार व्यसनमुक्त, प्रामाणिक जीवन जीकर पूज्यप्रवर के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा निवेदित करने का प्रयास करे। साध्वी भावनाश्री जी तथा साध्वी सुधाकुमारी जी ने क्रमशः भगवान महावीर के पुरुषार्थ की गाथा और अभ्यर्थना प्रस्तुत की। कार्यक्रम के प्रारंभ में मदुरै सभा के अध्यक्ष श्री नैनमल कोठारी ने स्वागत वक्तव्य दिया और तेरापंथ ट्रस्ट के मंत्री श्री अशोक जीरावाला ने साध्वीवृंद का परिचय दिया। न्यास के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश कोठारी एवं अन्य विशिष्ट जनों ने श्रद्धासिक्त प्रणति निवेदित की। महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती नैना पारख, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष श्री जयन्तीलाल जीरावाला, नया मंदिर के ट्रस्टी श्री सुमेरमल गोलेछा, उपासक श्री जीतेन्द्र चौपड़ा आदि ने साध्वीवृंद के स्वागत में अपने भावों की प्रस्तुति दी।कार्यक्रम में सेलम, ईरोड, चेन्नई, शिवकाशी, कोयलपट्टी, सातुर, त्रिची एवं आसपास के क्षेत्रों ने विभिन्न सभाओं के पदाधिकारी एवं श्रद्धालुजन उपस्थित थे। बाहर से आए आगंतुकों का साहित्य प्रदान कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशाजी और आभार ज्ञापन मदुरै सभा के मंत्री श्री धनराज लोढ़ा ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस का आयोजन

मदुरै स्थित तेरापंथ सभा द्वारा प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ का पांचवा महाप्रयाण साध्वीश्री डॉ. पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व सांसद श्री ए. जी. एस. रामबाबू उपस्थित थे, जिन्होंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के महान अवदान प्रेक्षाध्यान, अहिंसा यात्रा आदि का उल्लेख कर उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की। साध्वीश्री डॉ. पीयूषप्रभाजी ने प्रज्ञापूर्ण व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए कहा कि वे सर्फत ेरापंथके ि लिएह ी ाहीं,अ पितुस ंपूर्णम ाानवताके ि लए पूज्य थे। उन्होंने अपने दर्शन, ज्ञान और चारित्र के द्वारा देश और

समाज को उन्नत करने का महान प्रयास किया था। साध्वी भावनाश्री जी ने आचार्य महाप्रज्ञ की संकल्प शक्ति पर प्रकाश डाला, साध्वी सुधाकुमारीजी ने अपने गीतों के द्वारा तथा साध्वी दीप्तियशाजी ने अपने उद्‌गारों द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ को अपनी प्रणति निवेदित की। तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश कोठारी ने साहित्य प्रदान कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मंत्री श्री अशोक जीरावाला ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दीपिका फूलफगर ने किया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद

हैदराबाद सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री संगीतश्री के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का 254वां अभिनिष्क्रमण दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने आचार्य भिक्षु के महान गुणों का उल्लेख करते हुए कहा कि वे सत्य के अन्वेषी थे और आजीवन इसी दिशा में अग्रसर रहे। साध्वीश्री मुदिताजी ने भी अपने विचार रखे। हैदराबाद सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार सुराणा ने आचार्य भिक्षु के क्रांतिकारी व्यक्तित्व का परिचय दिया। श्री प्रसन्न भंडारी एवं जलगांव से समागत श्रीमती मंजूदेवी दुगड़ ने भी अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री श्री संजय छाजेड़ ने किया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांकरिया-मणिनगर

भगवान महावीर जन्म कल्याणक शोभा यात्रा

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांकरिया-मणिनगर, श्री जैन श्वेताम्बरम् ूर्तिपूजकस ंघत थाश्र ीर ाजस्थानए स.ए स.ज ैनस ंघ के संयुक्त तत्वावधान में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। तीनों संस्थाओं के लगभग एक हजार श्रावक-श्राविकाओं ने इस शोभा यात्रा में भाग लिया। जहाँ श्वेत परिधान में पुरुषों का जुलूस श्वेत सरिता का आभास दे रहा था, वहीं महिला मंडल की महिलाएँ गणवेश में सुसज्जित हो शोभा यात्रा को बासंती बना रही थीं। यात्रा के प्रारंभ से पहले आचार्य श्री महाश्रमणजी की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी ने मंगल पाठ सुनाया। शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर प्रस्थित किया औडा के चेयरमैन श्री धर्मेन्द्र शाह एवं स्थानीय कॉर्पोरेटर श्री आनन्द डागा ने। अपने संक्षिप्त वक्तव्य में श्री धर्मेन्द्र शाह ने भगवान महावीर के समता, सहिष्णुता एवं अपरिग्रह के सिद्धान्तों को अपनाने पर बल दिया। साध्वीश्री सुदर्शनाश्रीजी ने अपने ओजस्वी प्रवचन में भगवान महावीर के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। यात्रा में शामिल श्रावक-श्राविकाओं के हाथ में भगवान महावीर के उपदेशों की तख्तियाँ और आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तत अणुव्रत के नियमों की तख्तियाँ थीं। यात्रा के समापन पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री रायचंद लूनियां, कांकरिया श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के श्री अशोक गुंडेचा, श्री राजस्थान एस. एस. जैन संघ के श्री विनोद जैन तथा यात्रा के संयोजक श्री कंवरलाल पटवा और श्री मनोज लूनियां ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं पूरे संघ के श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आभार प्रकट किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बैंगलुरु

दिनांक 27 अप्रैल, 2014 को सभा के तत्वावधान में साध्वी श्री कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में मैसूर रोड स्थित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना/सेवाकेन्द्र में एक धर्मसभा का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीश्रीजी ने अणुव्रत जीवन शैली को अपनाने की प्रेरणा दी और कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण के कुशल नेतृत्व में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का जन्म शताब्दी समारोह आयोजित किया जा रहा है, जिसमें हर व्यक्ति स्वात्म-दर्शन एवं समीक्षा करे तथा अणुव्रत के नियमों पर चले। साध्वीश्री मंजुरेखाजी, साध्वीश्री उदितप्रभाजी, साध्वीश्री निर्भयप्रभाजी एवं श्री साध्वीश्री चेतनाश्री जी ने अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के प्रति श्रद्धा-गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल बोराणा ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए समागत जनमेदिनी का स्वागत किया। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष श्री गौतम कोठारी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश लोढ़ा, सभा के मंत्री श्री सुरेश दक आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा के सहमंत्री श्री माणक संचेती ने धन्यवाद ज्ञापित किया और कार्यक्रम का सफल संचालन सभा के कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र दवे ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत-उधना

चुनाव शुद्धि अभियान में अणुव्रत की भूमिका

तेरापंथ भवन परवत पाटिया में सभा द्वारा अणुव्रत समिति सूरत-उधना के तत्वावधान में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभाध्यक्ष श्री गौतम ढेलड़िया ने चुनाव शुद्धि अभियान के बड़े स्टिकर का अनावरण किया। अणुव्रत समिति, सूरत-उधना के अध्यक्ष श्री बालचंद बेताला तथा मंत्री श्री राकेश चोरड़िया ने सूरत में चलाए जा रहे चुनाव शुद्धि अभियान की विस्तृत जानकारी दी। अणुव्रत महासमिति के सहमंत्री श्री मीठालाल भोगर, प्रचार-प्रसार प्रभारी श्री अर्जुनलाल मेड़तवाल तथा श्री कान्तिभाई मेहता ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर उपस्थित राजस्थान पत्रिका के संपादक श्री प्रदीप जोशी ने चुनाव शुद्धिकरण अभियान की प्रशंसा की तथा चुनाव के संदर्भ में अणुव्रत के पालन पर जोर दिया और अणुव्रत के संदेशों को घर-घर में पहुँचाने में पत्रिका के सहयोग का आश्वासन दिया। चुनाव अभियान के संयोजक श्री राजेश सुराणा ने देश भर में चलाए जा रहे इस अभियान की पूरी जानकारी दी।

तप अभिनन्दन समारोह

सूरत-उधना सभा के तत्वावधान में वर्षीतप करने वाले श्री ज्ञानचंद कोठारी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरला कोठारी तथा श्रीमती इन्दिरा देवी गग्गा का तप अभिनन्दन किया गया। समारोह में सभा के पदाधिकारियों के अतिरिक्त महिला मंडल, अणुव्रत समिति और विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं समाज के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री राजेन्द्र बैद ने आभार ज्ञापित किया। अणुव्रत समिति, सूरत-उधना के सहमंत्री श्री पवन छाजेड़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयपुर

स्मृति सभा का आयोजन

प्रमुख समाजसेवी एवं धर्मपरायण श्रावक शासनसेवी स्व. सिद्धराज जी भंडारी के संथारा-संलेखनापूर्वक अमेरिका में देवलोकगमन पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा मालवीय नगर स्थित अणुविभा केन्द्र, जयपुर में दिनांक 27.04.2014 को स्मृति सभा का आयोजन किया गया। सभाध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया ने भंडारी जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित और बहुत ही परोपकारी थे, श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे। श्री राजेन्द्र बांठिया ने उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे तेरापंथी सभा, जयपुर के संरक्षक सदस्य तथा विकास परिषद के सदस्य थे। इस अवसर पर अणुविभा केन्द्र, जयपुर के अध्यक्ष तथा महासभा के न्यासी श्री पन्नालाल बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर, अभातेयुप के परामर्शक श्री पन्नालाल पुगलिया, तेरापंथी शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नरेश मेहता आदि भी उपस्थित थे।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अररिया कोर्ट

अणुव्रत संकल्प यात्रा के दौरान भावी महाव्रती मुमुक्षु नमन डागा का मंगल भावना समारोह

तेरापंथी सभा, अररिया द्वारा दिनांक 26 अप्रैल, 2014 को समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञाजी तथा समणी मानसप्रज्ञाजी के सान्निध्य में मुमुक्षु नयन डागा का मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। अररिया के इतिहास में प्रथम बार किसी दीक्षार्थी का मंगल भावना समारोह मनाया गया। ज्ञातव्य है कि यहाँ मुमुक्षु नमन का ननिहाल है। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में समणीजी ने नमन के आध्यात्मिक मनोबल के प्रति मंगल भावना व्यक्ति की। सभाध्यक्ष श्री सागरलाल चंडालिया, तेयुप अध्यक्ष श्री राजेश बेगबानी आदि ने वैरागी के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। मुमुक्षु नमन के नाना श्री मदनलाल चंडालिया, मामा श्री राजेश एवं विकास चंडालिया और अन्य परिजनों ने नमन के धर्म क्षेत्र में मंगल प्रवेश की सराहना की तथा संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित रहकर अपने भावी व्रत साधना के पथ पर बढ़ते रहने की मंगल कामना की।

OZ OZ _| OmJo
{ d í d m g

ज्ञानशाला समाचार

गुवाहाटी में ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

गुवाहाटी स्थित श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में दिनांक 1 अप्रैल से लेकर 3 अप्रैल, 2014 तक तीनि दवसीयज्ञ ानशालाप्र शिक्षकप्र शिक्षणशि विरक ाअ ायोजन किया गया। इस शिविर का संचालन उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षक श्री डालिमचंद नौलखा ने किया। शिविर में ज्ञानशाला के निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार विविध विषयों पर उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिनमें जैन तत्व-दर्शन, तेरापंथ दर्शन, ज्ञानशाला का संचालन कैसे हो, जैन परम्पराक ाइ तिहास,प्र ेक्षाध्यानए वंज ीवन-विज्ञानके प्र ायोगए वं व्यावहारिक ज्ञान आदि शामिल थे। शिविर विभिन्न दृष्टियों से अत्यंत उपयोगी एवं सार्थक रहा। शिविर के अंत में प्रायोगिक परीक्षाएँ ली गई, जिनमें लगभग 16 भाई-बहनों ने प्रतिभागिता की। गुवाहाटी सभा के अध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा ने इस अवसर पर अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। ज्ञानशाला की संयोजिका श्रीमती भारतीभ ंहणोतन ेआ ाभारज्ञ ापितकि या।शि विरके आ ायोजनमें तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं युवक परिषद के पदाधिकारियों एवं श्री प्रकाश बरड़िया का पूर्ण सहयोग रहा।

मुंबई में ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुंबई के तत्वावधान में घाटकोपर तेरापंथ भवन में दिनांक 15-16-17 अप्रैल, 2014 को तीन दिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का संचालन उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षक श्री डालिमचंद नौलखा ने किया। विज्ञ, विशारद एवं स्नातक में लगभग 37 बहनों ने भाग लिया।शि विरके द ौरानज ीव-अजीव,न ावत त्व-दर्शन,ष ड्द्रव्य, लौकिक धर्म, भिक्षु विचार-दर्शन, दान-दया, अनुकम्पा, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, ज्ञानशाला प्रारूप, तेरापंथ दर्शन, जैन परम्परा का इतिहास आदि का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया गया। शिविर विभिन्न दृष्टियों से अत्यंत उपयोगी एवं सार्थक रहा। शिविर के अंत में प्रायोगिक परीक्षाएँ ली गई। मुंबई सभा के अध्यक्ष श्री विनोद कच्छारा, मंत्री श्री निर्मल कुमठ, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कांता तातेड़, परीक्षा व्यवस्थापिका श्रीमती सुशीला बड़ाला आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला की संयोजिका श्रीमती सुधा सियाल ने आभार ज्ञापित किया। शिविर के आयोजन में श्रीमती मनीषा खाब्या का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्वावधान में मालवीयनगर स्थित अणुविभा केन्द्र में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन शासनश्री साध्वी अशोकश्रीजी के सान्निध्य में मनाया गया। सभाध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया ने पधारे हुए अभिभावकों एवं अन्य महानुभावों का स्वागत-अभिनन्दन करते हुए ज्ञानशाला के महत्व पर प्रकाश डाला। साध्वीश्री अशोकश्री जी ने अपने उद्‌बोधन बताया कि संस्कारों की आधारशिला है ज्ञानशाला, जो बच्चों को संस्कारी बनाकर एक संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में मदद करती है। साध्वीश्री सौम्ययशाजी एवं साध्वीश्री मंजूयशाजी ने गीत के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा अणुव्रत की आचार-संहिता पर परिसंवाद प्रस्तुत किया गया, जिसमें वर्तमान समय की राजनीति एवं जीवन की विसंगतियों का उल्लेख करते हुए अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता के पालन पर जोर दिया गया।

ज्ञानशाला के संयोजक श्री सुधीर चौरड़िया ने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को ज्ञानशाला में भेजें। कार्यक्रम के प्रायोजक अणुविभा केन्द्र, जयपुर के अध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद ने 'ज्ञानशाला व संस्कार एक सिक्के के दो पहलू' विषय पर अपने विचारों की प्रस्तुति की। सभा के सहमंत्री श्री सुरेश बरड़िया ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और ज्ञानशाला के संचालन में सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर सभाध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया ने ज्ञानशाला के कुशल संचालन हेतु प्रशिक्षकाओं का सम्मान किया।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह : गति-प्रगति

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का वर्षव्यापी आयोजन प्रवर्धमान है। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर अणुव्रत अभियान को गति प्रदान करने हेतु विविधमुखी कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इस दिशा में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के मुख्य संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में विभिन्न परियोजना-संयोजकों की सक्रिय सहभागिता से महासभा टीम द्वारा समर्पित भाव से कार्य किए जा रहे हैं। अप्रैल, 2014 के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ संचालित की गई :

1. विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के कार्यक्रमों में सहभागिता

विद्यार्थी संकल्प पत्र 12000 की संख्या में छपवाकर 24 अप्रैल, 2014 विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान को प्रेषित कर दिये गये हैं, जिन्हें भरवाने का कार्य प्रगति पर है।

संस्थान से प्रकाशित दैनंदिनी की प्रति प्राप्त हुई है, जिसमें प्रत्येकर पृष्ठर ररर पूज्यप्रवरक रि सूक्तियांर प्रकाशितक रि ईहैं। अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी, प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी का जीवन परिचय, तीनों पूज्यप्रवरों के चित्र और अणुव्रत आचार संहिता प्रकाशित की गई है। यह समाज के लिए गौरव का विषय है।

2. अणुव्रत संकल्प अभियान - अणुव्रत संकल्प पत्र भरवाने का कार्य

अणुव्रत संकल्प अभियान से अधिकाधिक व्यक्ति जुड़े इस हेतुर समस्तर तेरापंथीर सभाओंक ो पत्रद्व ारा इ सर्कोलएर ाघन अभियानच लानेके ि लए ा र्थ दया ग याहै र ाथ ह ीअ णुव्रत समिति एवं समस्त संघीय संस्थाओं को इस कार्य में जोड़ने हेतु निवेदन किया गया है।

विद्यार्थी संकल्प पत्र हिन्दी और अंग्रेजी में छपाए गए हैं, जिन्हें सभी अणुव्रत संकल्प यात्रा रथों में 9000-9000 की संख्या में प्रेषित कर दिया गया है।

3. तुलसी जन्म शताब्दी स्टीकर

सभी तेरापंथी सभाओं को तुलसी जन्म शताब्दी स्टीकर प्रचार-प्रसार की दृष्टि से प्रेषित किया गया है।

4. **गुवाहाटी सभा** में 2 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

5. **छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री रमण सिंह** ने अणुव्रत संकल्प यात्रा के अवसर पर अणुव्रत संकल्प पत्र को स्वयं भरा एवं एक मुख्य सड़क का नाम आचार्य तुलसी के नाम पर करने का आश्वासन दिया है।

6. जयपुर में अणुव्रत आचार संहिता पट्ट का लोकार्पण

राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति श्री एन. के. जैन तथा न्यायमूर्ति श्री एम. एन. रांका द्वारा महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर सकल जैन समाज द्वारा जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत आचार संहिता पट्ट का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत प्रवक्ता श्री जी. एल. नाहर, अणुव्रत समिति, जयपुर के अध्यक्ष श्री अजय नागोरी, तेरापंथी सभा, जयपुर के अध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया और मंत्री श्री राजेन्द्र बांठिया उपस्थित थे।

7. अणुव्रत संकल्प यात्रा :

पूर्वांचल

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन के क्रम में पूर्वांचल में अणुव्रत संकल्प यात्रा समणी ज्योतिप्रज्ञाजी व समणी मानसप्रज्ञाजी के नेतृत्व में अविराम रूप से गतिशील है।

दिनांक 01 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा गुवाहाटी पहुंची। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा व समणी मानसप्रज्ञाजी के

सान्निध्य में गुवाहाटी के तेरापंथ भवन में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजनहु आ ।र ।त्रिकालीनक ।र्यक्रमम ।सि ।मणीवृन्दक ।स् ।वागत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सभा अध्यक्ष श्री सुमेरमल जी सुराणा, श्रीमती सरोज बरड़िया, अध्यक्ष तेरापंथ महिला मंडल, श्री निर्मल कोटेचा, टी.पी.एफ संयोजक, श्री राजकुमार बैद, तेयुप अध्यक्ष आदि ने समणी जी के स्वागत में अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। इस अवसर पर समाज की तरफ से पूर्वांचल प्रहरी, पूर्वोदय, प्रातः खबर आदि पत्रों में चित्रों सहित समाचार प्रमुखता से प्रकाशित हुए।

दिनांक 02 अप्रैल, 2014 को गुवाहाटी के विशाल तेरापंथ भवन

में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सर्वोदय कार्यकर्ता अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित श्री हेमभाई थे। सभाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा द्वारा मुख्य अतिथि का साहित्य व क्षेत्रीय संस्कृति के प्रतीक फुलाम गमछा भेंट किया गया। इस अवसर पर दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ श्रावक श्री कपूरचन्द जी पाटनी भी उपस्थित थे। श्री हेमभाई ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखते हुए कहा कि जैन धर्म एक विशाल दर्शन, नैतिकता, चारित्र और ज्ञान समन्वित धर्म है। दिगम्बर जैन विद्यालय के अध्यक्ष श्री कपूरचन्द पाटनी ने कहा कि आज के भौतिकतावादी युग में अणुव्रत जरूरी है। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री अशोक सेठिया ने किया।

अणुव्रत संकल्प यात्रा के तहत गुवाहाटी में एक विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित हुआ, जो सीआरपीएफ सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स के विशाल कैम्पस में था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डी.आई.जी श्री एस.के. उपाध्याय तथा कमांडेंट श्री संजीव राय आदि उपस्थित थे। श्री सुमेरमल जी सुराणा, श्री विमल जी नाहटा ने उनका गमछा भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम में सीआरपीएफ के करीब 200 जवान पीटी ड्रेस में उपस्थित थे। कुछ अन्य जवानों ने भी अणुव्रत के नियमों को स्वीकार किया। कार्यक्रम में डाक्यूमेन्ट्री भी दिखाई गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री राजेश जम्मड़ ने किया।

इसी दिन समणीजी का एक अन्य कार्यक्रम श्री धानुका विद्यालय में हुआ, जहां समणी मानसप्रज्ञाजी ने विद्यार्थियों को अणुव्रतों की जानकारी दी तथा सुमधुर गीत भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की जानकारी मीडिया तक पहुंचाने में श्री संजय चोरड़िया का उल्लेखनीय योगदान रहा।

दिनांक 03 अप्रैल, 2014 को गुवाहाटी में विशाल अणुव्रत संकल्प रैली का आयोजन हुआ। रैली नेहरू स्टेडियम से उलुबाड़ी, डाल्टन बाजार, पानबाजार, एम.जी. रोड, भरालुमुख, जैन भवन, ए.टी रोड, केदार रोड, जेल रोड होते हुए तेरापंथ भवन पहुंची। इसमें करीब 50 वाहन जैन ध्वज लिए हुए महिलाओं व बच्चों के साथ गतिशील थे। रैली में महिलाओं और बच्चों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। इस गरिमामयी कार्यक्रम में असम के गर्वनर साहब उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री अशोक सेठिया ने किया। गुवाहाटी के मुख्य कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेन्स हुई, जिसमें दैनिक पूर्वोदय, पूर्वांचल प्रहरी, प्रातः प्रहरी, प्रातः खबर, द स्टेट्समैन आदि पत्रों के संवाददाता उपस्थित थे। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने गुरुदेव तुलसी जन्म शताब्दी की जानकारी देते हुए पत्रकारों को अणुव्रत का अर्थ व उसकी आचार संहिता की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में पत्रकारों के साथ महिला मंडल की अध्यक्ष के अध्यक्ष सभा के मंत्री श्री प्रदीप नाहटा, महासभा के प्रधान न्यासी श्री विमल नाहटा भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के आयोजन में विशिष्ट श्रावक श्री झिणकारमल दुधोड़िया की मुख्य भूमिका रही।

दिनांक 04 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ गुवाहाटी से करीब 15 किलोमीटर दूर शांति साधना आश्रम में पहुंचा। इस आश्रम के प्रभारी सर्वोदय कार्यकर्ता अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित श्री हेमभाई हैं। शंख ध्वनि एवं मंगल गीतों से बहिनों ने समणीजी का स्वागत किया। समणीजी ने अणुव्रत संकल्प यात्रा कीच ।र्चाक ेअ ेरस ।भाक ेअ ेरस ेअ ।श्रमक ेअ णुव्रतअ ।चार संहिता पट्ट भेंट किया।

दिनांक 11 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ नवगांव

पहुँचा। यहाँ रामानुजम महाविद्यालय के लगभग 250 विद्यार्थियों के बीच एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें समाज के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भी प्रतिभागिता की। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने भ्रष्टाचार, हिंसा, शोषण, सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में युगप्रवर्तक आचार्य तुलसी की भूमिकाओं का उल्लेख किया और समणी मानसप्रज्ञाजी ने उपस्थित जनसमुदाय को अणुव्रत की उपयोगिता बताते हुए उन्हें अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री मोहन नाहटा ने असमी भाषा में अणुव्रत की नियमावली से लोगों को परिचित कराया। महाविद्यालय को अणुव्रत संकल्प पट्ट भेंट किया गया। अनेक विद्यार्थियों ने अणुव्रत के नियमों की उपयोगिता को महसूस किया और लगभग 85 विद्यार्थियों ने अणुव्रत के संकल्प पत्र भरे। उन्होंने उन्हें जीवन भर अपनाने तथा दूसरों तक उन्हें पहुँचाने की भावना प्रकट की।

कार्यक्रम की सफलता में श्री छत्र गुजरानी, श्री संजय बोथरा, श्री विजय दुगड़, श्री राजू गुजरानी, श्री हंसराज बांठिया का सक्रिय योगदान रहा।

दिनांक 14 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा जोरहाट पहुँची। दिनांक 16 अप्रैल, 2014 को एक विशाल रैली का आयोजन किया गया, जिसे जोरहाट के पार्षद श्री अशोक मालपानी ने हरी झंडी दिखाकर विदा किया। इस रैली में तेरापंथ समाज के बालक, बालिकाएँ, महिलाए, युवक तो शामिल थे ही, अन्य जैन समुदायों एवं जैनेतर समुदाय के लोग भी बड़ी संख्या में शामिल थे। रैली में विभिन्न प्रकार की चार झांकियाँ शोभायमान थीं। संकल्प यात्रा मारवाड़ी ठाकुर बाड़ी के प्रांगण से प्रारंभ होकर विभिन्न अंचलों से गुजरती हुई जोरहाट से करीब दस किलोमीटर दूर काजीरंगा विश्वविद्यालय में पहुँची। वहाँ 'असली आजादी अपनाओ' के चित्रात्मक प्रदर्शन द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। समणी जी ने अणुव्रत के महत्व को प्रकट किया और जोरहाट सभा के अध्यक्ष श्री अनूपकुमार दुगड़ ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत के द्वारा देश का सर्वविध कल्याण हो सकता है। विश्वविद्यालय के प्रोफेर एवं डीन श्री जीवनचंद्र शर्मा कटकी तथा श्री मुरलीधर खेतान ने अणुव्रत अभियान की सराहना कीअ ौरद ोनोंअ णुव्रतीब ने ।क ार्यक्रमम ें ल ागभग2 50ि वद्यार्थी उपस्थित थे, जिनमें से विद्यार्थियों ने अणुव्रत के पालन के प्रति संकल्प ग्रहण किया।

दिनांक 20 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ असम के ढेकियाजुली पहुँचा, जहाँ हिंदी माध्यम, अंग्रेजी माध्यम तथा असमी माध्यम के विद्यालयों के 150 से अधिक विद्यार्थी एक ही वेशभूषा में सुसज्जित होकर रैली में शामिल हुए। उनके साथ बड़ी संख्याम ें स ामाजके अ न्यल ोगभ ीश ामिलथ े।व हाँ वशालरै ली चित्रलेखा होटल से प्रारंभ हुई और सर्वधर्म समभाव का नारा बुलंद करती हुई त्रिमूर्ति हॉल में पहुँची और एक भव्य सभा के रूप में परिणत हो गई। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी व समणी मानसप्रज्ञाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन से जन समुदाय को अणुव्रत के महान संकल्पोंस ेअ वगतक राया।म ुख्यअ तिथिके रू पम ेंश ्रीअ मिय कुमार दास, कॉलेज के प्रिंसिपल तथा श्री रबीन्द्र नाथ भूँइया के अतिरिक्त पाँच विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं अन्य अध्यापक भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। महासभा के राज्य प्रभारी श्री दिलीप दुगड़ ने अपने विचार रखे। समणी जी प्रेरणा से काफी जैनेतर लोग भी अणुव्रती बने। गर्ल्स हाई स्कूल, सरस्वती पब्लिक स्कूल, लिटल एंजेल स्कूल, ब्रह्मपुत्र पब्लिक स्कूल,राष्ट्रभाषा विद्यापीठ आदि विद्यालयों को अणुव्रत पट्ट भेंट किए गए और विद्यार्थियों को

नोटबुक एवं पाठ्य सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम का संचालन श्री चंदनमल बोथरा ने किया।

दिनांक 27 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ भागलपुर पहुँचा। 28 अप्रैल, 2014 को गणपत राय सलारपुरिया सरस्वती विद्या मंदिर के विशाल हॉल में एक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जहाँ लगभग 600 विद्यार्थी, शिक्षक, बी.एड. के छात्र एवं समाज के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। विद्यालय के प्रिंसिपल श्रीस जियन ेस मणीनि र्देशिकाज् योतिप्रज्ञाज ीक ेस ्वागतक िया। समणीजी ने विद्यार्थियों को अणुव्रत के महान व्रतों के पालन की प्रेरणा दी और जीवन विकास के सूत्र प्रदान किए। भागलपुर समाज के वरिष्ठ समाजसेवी श्री लक्ष्मीनारायण दोकानिया, श्री पवन सेठिया, श्री रूपेश बैद आदि ने विद्यालय के प्राचार्य को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किए।

दिनांक 30 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा जोरहाट शहर के काजीरंगा स्कूल में पहुंची, जहाँ जोरहाट सभा के अध्यक्ष श्री अनूपकुमार दुगड़ के प्रयासों से विश्वविद्यालय में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के विशाल हॉल में करीब 200-250 विद्यार्थी व अन्य जन उपस्थित थे। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञाजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत नैतिकता व संयम का संदेश देता है। उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता के बारे में आकर्षक चित्रों के माध्यम से समझाया। विश्वविद्यालय की ओर से श्री मुरलीधर एवं श्री सूरज खेतान ने समणी का स्वागत करते हुए कहा कि समणी जी ने आचार्य तुलसी का जो संदेश दिया है, उस पर सबको चलना चाहिए। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व डीन श्री जीवनचन्द्र शर्मा कटकी ने कहा कि अणुव्रत के नियम बच्चों के विकास के लिए अति आवश्यक हैं। श्री मुरलीधर, श्री खेतान व शर्माजी अणुव्रती बने। कुछ विद्यार्थी भी अणुव्रती बने।

इसी दिन मुस्लिम माइनोरिटी एजुकेशन स्कूल में पहुँचकर अणुव्रतसं कल्पय ात्रान ेए कन याइ तिहासस ृजित किया। किसी मुस्लिम स्कूल में किया जाने वाला यह पहला कार्यक्रम था। स्कूल के मुख्य सचिव श्री फारूख अली ने अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ का स्वागत किया। स्कूल के प्रधानाध्यापक को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट प्रदान किया गया। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी ने विद्यार्थियों को सद्प्रेरणाएँ दीं और असली आजादी अपनाओ आदि डोक्यूमेंटरी का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर समाज के अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अणुव्रत संकल्प यात्रा के अंतर्गत भागलपुर के सेंट्रल जेल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहाँ कमांडेंट श्री नीरज कुमार झा ने अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ का स्वागत किया। कार्यक्रम में लगभग 225 कैदी उपस्थित थे। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी ने अणुव्रत के महत्व को समझाया। कार्यक्रम में उपस्थित जेल के अधीक्षक महोदय स्वयं अणुव्रती बने। श्री मांगीलाल सेठिया, श्री पवन सेठिया, श्री उज्जैन मालू, श्री अमृत बेताला आदि ने जेल के अधीक्षक को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया। समणी मानसप्रज्ञाजी ने 65 महिला कैदियों के बीच अपने विचार रखे और उन्हें प्रेरणा दी। इस अवसर पर जेल के उप अधीक्षक ने इस कार्यक्रम की सराहना की।

भागलपुर के डी.पी.एस. स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 200 विद्यार्थी, शिक्षक एवं अन्य व्यक्ति उपस्थित थे। स्कूल के प्रिंसिपल श्रीमती अरुणिमा भट्टाचार्य ने अणुव्रत के महत्व को रेखांकित करते हुए बच्चों को उन्हें अपनाने की प्रेरणा दी। श्री हंसराजब ेतालान ेप्रिंसिपलम होदयाक ोअ णुव्रतआ चारसं हिता पट्ट भेंट किया।

उत्तरांचल

उत्तरांचल में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के अंतर्गत अणुव्रत संकल्प यात्रा समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञा के नेतृत्व में अग्रसर है। यह यात्रा रथ दिनांक **1 अप्रैल, 2014** को कोरना, समदड़ी, पालू, कानाना में पहुँचा। साध्वी मधुरेखाजी ने कानाना में अणुव्रत का महत्व बताते हुए उसे जीवन में अपनाने पर बल दिया। पालू में साध्वी प्रमोदश्री जी ने अणुव्रत के माध्यम से सच्चाई का

जीवन जीने की प्रेरणा दी। समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने अणुव्रत संकल्प यात्रा का प्रारूप बताया। संध्या समय डोक्यूमेंटरी के माध्यम से आचार्य तुलसी के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 3 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ सिवांची-मालानी क्षेत्र में पहुँचा, जहाँ तेरापंथी सभा टापरा ने उसका स्वागत किया। टापरा सभा में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञा ने अणुव्रत की विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए उसे अपनाने की प्रेरणा दी ताकि समाज में सद्भाव बढ़े तथा मानव जीवन सुन्दर और सार्थक बने। टापरा सभा को अनुव्रत आचार-संहिता पट्ट प्रदान किया गया। उसके बाद टापरा में स्कूल के बच्चों के बीच कार्यक्रम आयोजित किए गए, जहाँ जीवन-विज्ञान के प्रयोग करवाए गए एवं ज्योति केन्द्र प्रेक्षा तथा भाव विशुद्धि का संकल्प करावाया गया। इस अवसर पर समणी प्रणवप्रज्ञा ने गीत प्रस्तुत कर अणुव्रत की उपादेयताओं को उद्घाटित किया। विद्यालय के विद्यार्थियों को अणुव्रत नोट पुस्तिका वितरित की गई। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आसाढ़ा में आचार्य तुलसी पर निर्मित डोक्यूमेंटरी के माध्यम से तुलसी जीवन दर्शन को दर्शाया गया, जिससे प्रेक्षक अत्यंत प्रभावित हुए और आचार्य तुलसी के महान व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित की।

दिनांक 4 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा-रथ बाडमेर पहुँचा, जहाँ समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने अणुव्रत के पालन से होने वाली आत्मशुद्धि का उल्लेख किया और समणी प्रणवप्रज्ञा जी ने गीत के माध्यम से चारित्रोत्थान का संदेश दिया। तत्पश्चात तेरापंथी सभा, बाडमेर के तत्वावधान में समणीद्वय के सान्निध्य में बाडमेर कारागृह में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहाँ कैदियों को अणुव्रत के माध्यम से जीवन को सुधारने का संदेश दिया गया और हिंसा, अपराधा, असत्य के पथ को त्याग कर कायिक, वाचिक एवं मानसिक अहिंसा के भाव को जागृत करने की प्रेरणा दी गई।

दिनांक 5 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा-रथ बायतु पहुँचा, जहाँ तेरापंथी सभा द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। समणीद्वय ने श्रावक समाज के समक्ष अणुव्रत के मानवोपयोगी सिद्धान्तों की चर्चा की।

दिनांक 6 अप्रैल, 2014 कोअ णुव्रतसं किल्पय ात्राक ाअ गला पड़ावअ ासोतराम हिं आ। ज हाँआ ायोजितक ार्यक्रमम ेंस मणीद्वय के अतिरिक्त श्री ललित कुमार टेलड़िया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल द्वारा भिक्षु अष्टकम का संज्ञान किया गया। स्थानीय सभा को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री जोगराज कोठारी ने किया।

दिनांक 7 अप्रैल, 2014 को बालोतरा में अणुव्रत संकल्प यात्रा-रथ पहुँचने पर समाज द्वारा उसका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बाडमेर के लोकसभा के प्रत्याशी श्री जसवंत सिंह के अतिरिक्त अणुव्रत महासमिति के मंत्री श्री मर्यादा कोठारी, यात्रा संयोजक श्री कैलाश डूंगरवाल विशेष रूप से उपस्थित थे।

दिनांक 11 अप्रैल, 2014 को उत्तरांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा का प्रवेश मेवाड़ में तेरापंथ के उद्गम स्थल केलवा में हुआ। केलवा में एक भव्य रैली का आयोजन किया गया और साध्वीश्री उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में एक कार्यक्रम आयोजित हुआ।

दिनांक 12 अप्रैल, 2014 को राजनगर के आलोक स्कूल, सुभाष पब्लिक स्कूल एवं गांधी सेवा सदन में समणी निर्मलप्रज्ञा जी एवं समणी प्रणवप्रज्ञा जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुए। इस अवसर पर डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री ललित बड़ोला, श्री रोशन कावड़िया आदि भी उपस्थित थे। राजनगर सभा के अध्यक्ष ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दिनांक 13 अप्रैल, 2014 को भिक्षु नियलम, राजनगर में भगवान महावीर की जयन्ती मनाई गई और मुनिश्री हर्षलालजी के सान्निध्य में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री हर्षलालजी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों के माध्यम से देश की समस्याओं के निदान का सुझाव दिया और समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने अणुव्रत संकल्प यात्रा की जानकारी दी।

कार्यक्रम में मुनिश्री यशवंत कुमारजी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी, श्री पदमचंद पटावरी, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, श्री अशोक डूंगरवाल, श्री रमेश चपलोत आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभा के अध्यक्ष ने स्वागत भाषण दिया। भिक्षु बोधि स्थल के मंत्री श्री महेश लोढ़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दिनांक 14, अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा-रथ राजसमंद पहुँचा, जिसका स्वागत अणुव्रत विश्व भारती के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सुरेश कावड़िया ने किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. हीरालाल श्रीमाली, श्री चतुर कोठारी, श्री रमेश सोनी, श्री कमलेश धाकड़, श्री राजकुमार दक आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री अशोक डूंगरवाल ने किया।

दिनांक 15 अप्रैल, 2014 को पड़ासली गांव में अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ पहुँचा, जहाँ तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री गुणसागर धींग ने उसका स्वागत किया। साध्वीश्री सौभाग्ययशा जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि यह यात्रा रथ अणुव्रत के माध्यम से त्याग की चेतना जागृत कर रही है। इस अवसर पर गायत्री पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी भी उपस्थित थे, जिन्हें आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष के अवसर निर्मित नोटबुक वितरित किए गए। डोक्यूमेंटरी के माध्यम से आचार्य तुलसी के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 16 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रीछेड़ पहुँची, जहाँ तेरापंथी सभा द्वारा उसका स्वागत किया गया। समणीद्वय ने अणुव्रत के नियमों से जीवन को उन्नत करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में अनेक श्रावक-श्राविकाएँ तथा समाज के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इनमें श्री गणेशलाल कच्छारा काकरोली, श्री हिम्मत कोठारी, यात्रा के सह-संयोजक श्री कान्तिलाल धाकड़ प्रमुख थे। मेवाड़ के गांवों-नगरों में आचार्य तुलसी के अवदानों को उद्घाटित करते हुए अणुव्रत संकल्प यात्रा-रथ ने विभिन्न स्कूलों, सभा भवनों, सार्वजनिक स्थलों तथा कारागृहों में चारित्रोत्थान की प्रेरणा प्रसारित की और विद्यार्थियों से संकल्प पत्र भरवाए, उन्हें आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर नोटबुक वितरित किए एवं विद्यालयों आदि को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किए।

उसी दिन संकल्प यात्रा गजपुर (घाटा) पहुंची जहां स्थानीय समाज द्वारा उसका स्वागत-अभिनन्दन किया गया। समणी निर्देशिका

निर्मलप्रज्ञाजी ने जीवन में निखार लाने के लिए अणुव्रत की भूमिका का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन संस्था के अध्यक्ष ने किया।

दिनांक 17 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा गांबगुड़ा गांव पहुंची, जहां ग्रामवासियों द्वारा उसका भव्य स्वागत किया गया। मध्यवर्ती गांव कोमल व सांया का खेड़ा में यात्रा का पड़ाव रहा है। ग्रामवासियों को समणी निर्देशिका निर्मल प्रज्ञाजी ने मंगल पाथेय प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश मेहता ने किया।

संकल्प यात्रा का अगला पड़ाव गोगुंदा में हुआ। वहाँ अणुव्रत रैली निकाली गई, जो कई मार्गों से गुजरती हुई कार्यक्रम स्थल पर पहुँची। कार्यक्रम का संचालन सभा के अध्यक्ष श्रीमाल खोखावत ने किया।

इसके बाद संकल्प यात्रा रावलियां कला व खुर्द गांव पहुंची, जो धर्मसंघ के तृतीय आचार्य रायचन्दजी की जन्मभूमि, दीक्षाभूमि व निर्वाण भूमि है। रावलियां में स्थानीय समाज द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया।

दिनांक 18 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा पदराडा पहुंची, जहां स्थानीय समाज द्वारा उसका स्वागत किया गया। समणी निर्मलप्रज्ञा ने श्रावकों को शताब्दी वर्ष की जानकारी दी।

पदराता के बाद संकल्प यात्रा का शायरा क्षेत्र में प्रवेश हुआ। सभा अध्यक्ष श्री मोतीलाल जी ने समणी वृन्द का हार्दिक स्वागत किया। सभाध्यक्ष व पदाधिकारियों को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया।

दिनांक 19 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा उदयपुर पहुंची, जहां तेरापंथी सभा द्वारा उसका हार्दिक स्वागत किया गया। इस अवसर पर समणीवृंद के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम का संचालन श्री राजकुमार फतावत ने किया। इसी तारीख को

अणुव्रत संकल्प यात्रा का रथ नारायण सेवा संस्थान पहुंचा, जहाँ समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञा ने अपने उद्‌बोधन द्वारा उपस्थित श्रावक समाज को लोक-जीवन में व्याप्त मानवीय दुर्बलताओं को परिष्कृत करने तथा स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा दी।

दिनांक 20 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा उदयपुर जिला कारागृह में कैदियों के बीच पहुंची। समणीवृंद के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में सभाध्यक्ष श्री राजकुमार फतावत ने कैदियों को सम्बोधित करते हुए आचार्य तुलसी के शताब्दी वर्ष पर अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि जेल अधीक्षक श्री कैलाश त्रिवेदी और अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र डागलिया ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर काफी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था।

दिनांक 21 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा कानोड़ पहुंची, जहां स्थानीय समाज द्वारा उसका भव्य स्वागत किया गया। संकल्प यात्रा का कार्यक्रम संस्था परिसर में हुआ। स्कूल के बच्चों द्वारा भव्य अणुव्रत रैली का आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी नागौरी को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। स्कूल के बच्चों को नोटबुक वितरित की गई।

अणुव्रत संकल्प यात्रा का अगला पड़ाव आकोला क्षेत्र में हुआ। यहाँ अणुव्रत रैली निकाली गई।

दिनांक 22 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा फतेहनगर पहुंची, जहां दिगम्बर परम्परा के आचार्य सुकुमाल नन्दी एवं श्वेताम्बर श्रमण संघ के महामंत्री सौभाग्य मुनि कुमुद एवं समणी निर्मलप्रज्ञा, समणी प्रणवप्रज्ञा के नेतृत्व में तुलसी शताब्दी का भव्य आयोजन किया गया। आचार्यश्री सुकुमाल नन्दी ने अपने वक्तव्य में आचार्य तुलसी के क्रान्तिकारी विचारों ने धर्म के क्षेत्र में परिवर्तन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन शासनसेवी श्री सवाईलाल पोकरना ने किया।

दिनांक 23 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रेलमगरा पहुंची, जहां तेरापंथी सभा के पदाधिकारियों द्वारा उसका भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम साध्वी सम्यकप्रभा, साध्वी प्रवलयशा एवं समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। संस्था को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया।

दिनांक 25 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा मोलेला गांव पहुंची, जहां तेरापंथी परिवार की संख्या बहुत कम है लेकिन अन्य जैन समाज ने संकल्प यात्रा में जो उत्साह दिखाया वह सराहनीयथ ा क र्यिक्रमक ि यवस्थास ुनियोजितढ ंगस े क ि ग ई थी। समणी प्रवणप्रज्ञा ने छात्रों को संकल्प एवं स्मृतिवर्धन प्रयोग भी करवाए। स्कूल प्रधान को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया। अणुव्रत संकल्प यात्रा का अगला पड़ाव मेवाड़ के सिशोदा में हुआ, जहाँ स्थानीय समाज एवं महासभा के न्यासी श्री सोहनलाल धाकड़ ने समणीवृन्द का स्वागत किया।

दिनांक 26 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ ने द्वारकाधीश की नगरी कांकरोली में प्रवेश किया। यहाँ भव्य अणुव्रत रैली निकाली गई, जिसमें कांकरोली आलोक स्कूल, सोफिया पब्लिक स्कूल, सीनियर सेकेन्डरी स्कूल के छात्र शामिल थे। रैली कांकरोली के मुख्य मार्गों से होते हुए कांकरोली प्रज्ञा भवन पहुंची, जहाँ कार्यक्रम का आयोज किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र कर्णावट थे। समणी निर्मल प्रज्ञा ने मंगल उद्‌बोधन दिया तथा कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती मधु चोरड़िया ने किया। सायंकालीन सत्र में प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के मुख्य वक्ता तेरापंथ प्रवक्ता महावीर राज गेलड़ाथ े ।उ न्होंनेअ पनेव क्तव्यम ें द ुर्लभम ानवज ीवनम ें उ त्तम व्यक्तित्व के निर्माण हेतु संयम के समरांगन में प्रवेश की प्रेरणा दी। संयोजन एवं आभार ज्ञापन सभा के मंत्री द्वारा किया गया।

दिनांक 27 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा तासोल पहुंची, जहां मुनिश्री सिद्धार्थ कुमारजी एवं समणीवृंद के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गणेशलाल कच्छारा थे। सभा अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। सभाध्यक्ष श्री नेरूलाल बोहरा ने आभार ज्ञापित किया।

दिनांक 28 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा बिनौल पहुंची, जहां उपस्थित जनसमुदाय ने यात्रा का स्वागत किया। इस

अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में समणीजी से अणुव्रत के नियमों को अपनाने की प्रेरणा दी। संस्था के अध्यक्ष श्री रोशनलाल बाफणा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

दिनांक 29 अप्रैल 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा आमेट पहुँची। यहाँ एक भव्य रैली का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य तुलसी स्कूल, आमेट के बच्चों ने भाग लिया। समणी निर्देशिका निर्मलप्रज्ञा ने कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं संबोधित किया। तेरापंथ सभा, आमेट को पट्ट भेंट किया गया।

दिनांक 30 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा दीवेर पहुंची, जहां तेरापंथी सभा ने यात्रा का स्वागत किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में समणी निर्मलप्रज्ञा ने अपने मंगल उद्बोधन में अणुव्रत के नियमों के बारे में बताया। सभा को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया।

30 अप्रैल 2014 को ही अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ लाम्बोड़ी पहुँचा। समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने लाम्बोड़ी सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत संयम के वर्धमानत्व की एक अद्भुत कला है। इसने ज्ञान, साधना, संयम एवं तपस्या के माध्यम से अध्यात्म का रास्ता दिखाया। समणी प्रणवप्रज्ञा ने गीत संगान किया। कार्यक्रम में सभा के पदाधिकारियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था। इस अवसर पर सभा को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया।

निर्देशिका समणी निर्मलप्रज्ञा एवं समणी प्रणवप्रज्ञा ने डीडवाना में बी.आर.एम. पब्लिक स्कूल में 1200 बच्चों और जी.सी.जे. स्कूल में 1000 बच्चों की उपस्थिति में अणुव्रत संकल्प यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला और उन्हें अणुव्रत के नियमों को अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में डीडवाना सभाध्यक्ष श्री सुरेश जी व अन्य श्रावकगण उपस्थित थे।

उसके बाद समणी निर्मलप्रज्ञा ने डेगाना में शारदा बाल निकेतन स्कूल में बच्चों को सम्बोधित किया। यहाँ सभाध्यक्ष श्री खेमराज जी कोठारी ने अणुव्रत रैली का आयोजन किया। नजदीक के गांव ईडवा, जावला, बजोली, चंदारुण, गुलर आदि क्षेत्रों के लोगों ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर अणुव्रत के नियमों के पालन के प्रति अपनी रुचि दर्शाई।

यहाँ से अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ समणी निर्मलप्रज्ञा के नेतृत्व में महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं प्रीस्टार पब्लिक विद्यालय-छोटीखाटू पहुँचा, जहाँ समणी जी ने बच्चों को संबोधित किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री भोमाराम चौधरी एवं ओंकारजी नैण को श्री प्रेमचन्द पण्डेल द्वारा अणुव्रत पट्ट और साहित्य भेंट किया गया।

दक्षिणांचल

दक्षिणांचल संकल्प यात्रा का अविश्रांत रथ समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी एवं समणी रश्मिप्रज्ञाजी के नेतृत्व में दिनांक **8 अप्रैल, 2014** को यशवंतपुर स्थित केन्द्रीय विद्यालय में पहुँचा, जहाँ स्कूल के प्रिंसिपल श्री केशव भट्ट ने अणुव्रत संकल्प यात्रा का स्वागत किया। स्कूल के प्रार्थना के अवसर पर लगभग 800 विद्यार्थियों की उपस्थिति में कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सभी कक्षाओं के विद्यार्थी अपने स्कूल की वेशभूषा में कतारबद्ध बैठे थे और उनकी कक्षाओं के मानीटर अगली पंक्ति में बैठे थे। प्राचार्य महोदय ने विद्यार्थियों को अणुव्रत के महान नियमों से परिचय कराया। समणीजी ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि अणुव्रत के नियम मानवता की पाठ पढ़ाते हैं। हर विद्यार्थी पहले मनुष्य बने उसके

बाद ही डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासक, व्यापारी और अन्य पेशेवर बने। समणी रश्मिप्रज्ञाजी एवं समणी गौतमप्रज्ञाजी ने विद्यार्थियों को जीवन परिवर्तन तथा स्मृति शक्ति वृद्धि हेतु कुछ महत्वपूर्ण सूत्र बताए। इस अवसर पर विद्यालय को अणुव्रत संकल्प पट्ट भेंट किया गया और विद्यार्थियों को अणुव्रत पुस्तिका एवं लेखन सामग्री प्रदान की गई। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अणुव्रत के नियमों के पालन के प्रति रुचि प्रदर्शित की।

दिनांक 19 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ कर्णाटक के के.जी.एफ. पहुँचा, जहाँ तेरापंथ भवन में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञाजी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत संहिता के पालनीय सूत्रों की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी चरित्रसंपन्न समाज की संरचना के आग्रही थे और इसीलिए अपने समय की विद्यमान विसंगतियों को दूर करने हेतु उन्होंने अणुव्रत अभियान प्रारंभ किया था। उनकी जन्म शताब्दी के वर्ष में हमें अणुव्रत के संकल्पों का पालन करना है ताकि हम एकस् वस्थस् माजए वंच रित्रसंपन्नदे शक ी र चनाम ें स हभागीब न सकें। समणी गौतमप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें मानव को सही मायने में मानव बनाने का प्रयास करना है तभी राष्ट्र एवं समाज का निर्माण हो सकता है। इस कार्यक्रम में राजस्थान न्यूज, कन्नड़ प्रभा, आई.टी.वी., इंडियन एक्सप्रेस समूह के प्रेस रिपोर्टर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष श्री गमनसीलाल सेठिया के अतिरिक्त श्री मोतीलाल मुथा, श्री मदनलाल हींगड़ आदि की सराहनीय उपस्थिति थी। इस अवसर पर 'तुलसी जीवन झांकी' एवं 'असली आजादी अपनाओ' आदि फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 20 अप्रैल, 2014 को समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी एवं समणी रश्मिप्रज्ञाजी अणुव्रत की मशाल लेकर हरे-भरे छोटे-से कस्बे मूडगिरि में पहुँची। गांव छोटा था पर श्रद्धा की भावना अनूठी थी। वहाँ अणुव्रत रैली का भव्य आयोजन हुआ। रैली में 5 से लेकर 7 वर्ष के बच्चे छोटे-छोटे झंडियों को लहराते हुए चल रहे थे। यह मोहक दृश्य को दर्शकों को विमोहित कर रहा था। रैली में महिला मंडल, युवक परिषद अपने-अपने परिधान में पंक्तिबद्ध होकर बैनरों के साथ बढ़ रहे थे। रास्ते में पैंपलेट वितरित किए गए। अणुव्रत के नारों से गूँजता हुआ अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ मुख्य सड़क एवं बाजार से होता हुआ जैन भवन में पहुँचा जहाँ धर्मसभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञाजी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत संहिता की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी मानव धर्म के अधिष्ठाता थे। उन्होंने मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए अणुव्रत रूपी फूलों का गुलदस्ता समाज को समर्पित किया। अणुव्रत का मूल आधार है व्यक्ति का सुधार। देश में उपस्थित किसी भी विसंगति को दूर करने के लिए अणुव्रत महान साधन है। अतः आज केष् ाुग म ेंअ णुव्रतके ि नयमोंक ोअ पनानेक ीम हतीअ ावश्यकता है। समणी जी ने कहा कि समाज और राष्ट्र को अणुव्रत के द्वारा सुधारा जा सकता है और समाज के हर व्यक्ति की चेतना को झंकृत किया जा सकता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे वी. एस. इंग्लिश मीडियम स्कूल के प्रिंसिपल श्री विश्वनाथ राय ने कहा कि मैं इन नियमों को स्कूल के शिक्षकों एवं बच्चों को बताऊँगा और उन्हें इनका पालन करने हेतु प्रेरित करूँगा। कार्यक्रम में मूर्तिपूजक सभा के अध्यक्ष श्री सरेमल मांडोत, स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष श्री मोहनलाल बरा, तेरापंथी समाज के श्री भंवरलाल पुनमिया के अतिरिक्त श्री हेमराज, मुकेश, संजय खटेड, श्री कुशल बरलोटा आदि उपस्थित थे। तीनों समाज के लोगों ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत को महान अवदान मानते हुए आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित इस अभिनव कार्यक्रम की भूरि-भूरि सराहना की। इस अवसर पर 'असली आजादी अपनाओ', 'नशामुक्ति' आदि फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 22 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी के नेतृत्व में मनलाड़ क्षेत्र के प्रवेश द्वार होलेनरसिपुर पहुँचा, जिसके स्वागत में स्थानीय लोगों ने पलक पावड़े बिछा दिए। समणीवृंद के सान्निध्य

में अणुव्रत संकल्प रैली आयोजित की गई, जिसमें महिला मंडल, कन्या मंडल, युवक परिषद के सदस्यों ने जयघोषों पूरे वातावरण को गुंजायमान कर दिया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में समणीवृंद के प्रेरक उद्‌बोधन से अणुव्रत के प्रति जागरूकता पैदा हुई। कार्यक्रम का संयोजन श्री विमल पितलिया ने किया। सर्वश्री लोकेश, मनीष, कमलेश, राम प्रसाद भाई, विकास पिचौलिया ने प्रबंधन के साथ-साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। संध्या समय नशामुक्ति, बेटी बचाओ, असली आजादी अपनाओ आदि डोक्यूमेंटरी प्रदर्शित की गई।

दिनांक 23 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ जैनों के तीर्थ धाम श्रवणबेलगोला में पहुँचा, जहाँ समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी के सान्निध्य में अणुव्रत संकल्प रैली आयोजित की गई। अणुव्रत संकल्प रथ जब चामुंडी राय बस्ती पहुँचा तो स्वस्ति चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी ने अणुव्रत रथ को माल्यार्पण कर उसका स्वागत किया और कहा कि यह परिकल्पना बहुत अच्छी है और मानवता के हित में है। समणी कंचनप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी दो बार इस तीर्थ धाम पर पधारे थे और मानव को मानव बनाने हेतु अपना पावन संदेश दिया था। कार्यक्रम में श्री महावीर भंसाली, श्री भंवरलाल नाहर और श्री चंदराय पटना समेत कई गण्यमान्य व्यक्ति पधारे थे। श्री अशोक बोहरा तथा श्री राजेश कुमार वाफना ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया।

दिनांक 24 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा का पड़ाव श्रवणबेलगोला के निकटवर्ती कस्बा चंदराय पटना में हुआ। समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी के सान्निध्य में अणुव्रत संकल्प रैली आयोजित की गई, जो बागु रोड,के अ ारस ार्कल,ड ाए नर ाड,रे गुकु मार ाडके ग ुजरतीह ुई येलेमा छत्रम पहुँची। श्री शांतिलाल मेहता ने उसका स्वागत किया। चंदराय पटना के विधायक श्री बालकृष्ण ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि अहिंसा को समझना है तो जैन धर्म से समझना होगा। स्थानीय सभा को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री महावीर भंसाली ने किया। कार्यक्रम में श्रवणबेलगोला, शिमोगा, हासन आदि के कई गण्यमान्य व्यक्ति पधारे थे। शाम को मठ के परिसर में आचार्य सच्चिदानन्द महाराज, श्रुतनंद महाराज, शविमति आदि ठाणा-4, चारुकीर्ति भट्टारक के सान्निध्य में कार्यक्रम हुआ। संध्या समय

नशामुक्ति, बेटी बचाओ, असली आजादी अपनाओ आदि डोक्यूमेंटरी प्रदर्शित की गई। श्री गणपतलाल बोहरा, श्री गोपाल सुखलेचा, श्री बाबूलाल, श्री श्रेयांस मेहता, श्री मनोज बोहरा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया।

दिनांक 25 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ का आगमन हासन नगर में हुआ। अणुव्रत रैली में सभी समाजों के सैकड़ों लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर समणी निर्देशिका निर्वाणप्रज्ञा ने आचार्य तुलसी के महान अवदानों की चर्चा की। समणी कंचनप्रज्ञा ने कहा कि आचार्य तुलसी ने जन-जन में नैतिकता की चेतना जगाने के लिए अणुव्रत आन्दोल प्रारंभ किया। सभाध्यक्ष श्री चंदमल सुराणा ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हासन के विधायक श्री एच.एस. प्रकाश ने अणुव्रत के अवदानों का उल्लेख किया। अणुव्रत संकल्प यात्रा के संयोजक श्री दीपचंद नाहर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सह-संयोजक श्री राजेश चावत ने कन्नड़ भाषा में अणुव्रत संकल्प यात्रा की जानकारी दी। मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष श्री देवराज पार्लेचा, स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष श्री वसंत बोहरा, सभा मंत्री श्री सोहनलाल तातेड़, मलनाड़ के पूर्वाध्यक्ष श्री फूलचंद तातेड़, अणुव्रत प्रभारी श्री मूलचंद सोनीजरा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। मलनाड़ के कोषाध्यक्ष श्री महावीर भंसाली ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर कन्या मंडल द्वारा एक नाटक प्रस्तुत किया गया। संध्या समय नशामुक्ति, बेटी बचाओ, असली आजादी अपनाओ आदि डोक्यूमेंटरी प्रदर्शित की गई।

दिनांक2 6अ प्रैल,2 014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा हासन के मंजुनाथ स्वामी आयुर्वेदिक एवं एस. डी. एम. कॉलेज पहुंची, जहाँ समणी निर्वाणप्रज्ञाजी, समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी

मध्यस्थप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री महावीर भंसाली ने समणीवृंद, कालेज के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया। समणीवृंद ने विद्यार्थियों को अणुव्रत के महान संकल्पों को अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर एस डी एम कॉलेज के डॉक्टर श्री प्रसन्न एम राव ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि हम डॉक्टर लोग बाहरी रोगों का निदान करते हैं, किन्तु आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से मनुष्य के अंदर की बीमारियों को दूर करने का रास्ता दिखाया है। कार्यक्रम में लगभग 400 की संख्या में डॉक्टर, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। सभी ने अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ का अवलोकन किया और अणुव्रत संकल्प पत्र भरा। कॉलेज को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट प्रदान किया गया और विद्यार्थियों को अणुव्रत साहित्य एवं नोटबुक वितरित किए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री फूलचंद तातेड़, श्री विजयराज गोलछा, श्री सोहनलाल तातेड़, श्री प्रकाश कुमार भंसाली, श्री इंद्रकुमार तातेड़ आदि ने योगदान किया। डॉ. अश्विन कुमार ने आभार ज्ञापित किया तथा श्रीमती मल्लिका ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दिनांक 27 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा सकलेशपुर पहुँची। समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी तथा मूर्तिपूजक संप्रदाय की साध्वी उज्ज्वल ज्योति के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। समणी कंचनप्रज्ञाजी ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी 20वीं शताब्दी के युग निर्माता संत थे। साध्वी उज्ज्वल ज्योति और श्री बालकृष्ण ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में श्री महावीर भंसाली, श्री सोहनलाल तातेड़, श्री रिखव चंद्र नाहर और श्रीमती दिव्या बाफना ने भी अपने भावों की प्रस्तुति की।

इसी दिन समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञाजी के सान्निध्य में मैसूर रोड स्थित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना/सेवाकेन्द्र में एक धर्मसभा का आयोजन किया गया, जिसमें समणीवृंद ने अणुव्रत जीवन शैली को अपनाने की प्रेरणा दी। समणी मंजुरेखाजी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत संहिता के पालनीय सूत्रों की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी चरित्रसंपन्न समाज की संरचना के आग्रही थे और इसीलिए अपने समय की विद्यमान विसंगतियों को दूर करने हेतु उन्होंने अणुव्रत अभियान प्रारंभ किया था। उनकी जन्म शताब्दी के वर्ष में हमें अणुव्रत के संकल्पों का पालन करना है ताकि हम एक स्वस्थ समाज एवं देश की रचना में सहभागी बन सकें। समणी गौतमप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें मानव को सही मायने में मानव बनाने का प्रयास करना है तभी राष्ट्र एवं समाज का निर्माण हो सकता है। इस कार्यक्रम में राजस्थान न्यूज, कन्नड़ प्रभा, आई.टी.वी., इंडियन एक्सप्रेस समूह के प्रेस रिपोर्टर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष श्री गमनसीलाल सेठिया के अतिरिक्त श्री मोतीलाल मुथा, श्री मदनलाल हींगड़ आदि की सराहनीय उपस्थिति थी। इस अवसर पर 'तुलसी जीवन झांकी' एवं 'असली आजादी अपनाओ' आदि फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 29 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा धर्मस्थल पहुँची, जहाँ श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने माल्यार्पण कर यात्रा रथ का स्वागत किया। उन्होंने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व महान था। उन्होंने चारित्रिक उत्थान हेतु अणुव्रत आन्दोलन चलाया। स्थानीय टी.वी. चैनल ने रवीन्द्र हेगड़े का इंटरव्यू लिया। इसके माध्यम से लाखों लोगों तक आचार्य तुलसी का संदेश पहुँचा। इस अवसर पर संखलेशपुर, शिमोगा, मंगलूर, चिकमंगलूर आदि के अनेक गण्यमान्य लोग उपस्थित थे। संध्या समय यह यात्रा मंगलूर पहुँची। कदरी पार्क में युवकों ने हजारों पैंपलेट वितरित किए। इस अवसर पर एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया गया, जिसमें उदयवाणी, जनवाणी, विजयवाणी, टाइम्स ऑफ इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस आदि तैंतीस पत्रिकाओं के पत्रकार उपस्थित थे। पार्क के खुले मैदान में प्रोजेक्टर के माध्यम से श्री केशवराज पनेरु ने नशामुक्ति, बेटी बचाओ, ये है अणुव्रत संकल्प यात्रा आदि डोक्यूमेंटरी प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम के आयोजन में

मैंगलूर सभा तथा युवक परिषद का सक्रिय योगदान रहा।

दिनांक 30 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ अपनी गति से बढ़ती हुई पहाड़ों के शिखरों का स्पर्श करती हुई शिक्षा नगरी तथा परशुराम की भूमि मैंगलूर पहुँचा। वहाँ अणुव्रत रैली का आयोजन किया गया, जिसे देख दर्शक अभिभूत थे। रास्ते में पैंपलेट वितरित किए गए। नारों की गूंज के साथ रैली एस. डी. एम. आई हॉस्पीटल से एस. डी. एम. लॉ. कॉलेज पहुँची, जहाँ एक भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक पंडिताचार्यवर्य स्वामी, श्री जैन मठ मूडबिदरी उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री वासुपूज्य स्वामी श्वेताम्बर जैन संघ, श्री गुजराती जैन मंदिर, श्री स्थानकवासी जैन संघ के सदस्य भी उपस्थित थे। समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञाजी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत संहिता की जानकारी दी। यहाँ आठ अखबारों के संवाददाताओं ने कार्यक्रम की रिपोर्ट अपने अखबारों में प्रकाशित की। इस अवसर पर उपस्थित श्री लोकानन्द स्वामी ने अणुव्रत के नियमों के पालनीय सूत्रों की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी इसके माध्यम से चरित्रसंपन्न समाज की संरचना करना चाहते थे। अध्यक्ष श्री तेजकरनजी तथा श्री महावीर भंसाली ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री लक्ष्मीपत ने किया। इस अवसर पर 'असली आजादी अपनाओ', 'नशामुक्ति' आदि फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 30 अप्रैल, 2014 को ही सायं 6 बजे अणुव्रत संकल्प यात्रा जन-जन को अणुव्रत का संदेश देती हुई आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी एवं समणी रश्मिप्रज्ञाजी के नेतृत्व में जैनों के तीर्थधाम मुडमदरी पहुँची। यहाँ जैन मठ में भट्टारक पट्टमाचार्यवर्य की सन्निधि में कार्यक्रम आयोजित हुआ। सर्वप्रथम बच्चों ने पार्श्व स्तुति से मंगलाचरण किया। समणी कंचनप्रज्ञा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी 20वीं शताब्दी के युग निर्माता संत थे। वे चरित्रसंपन्न समाज की रचना करना चाहते थे। उन्होंने अणुव्रत अभियान प्रारंभ किया था ताकि समाज एवं राष्ट्र नैतिक दृष्टि से महान बने। उनकी जन्म शताब्दी के वर्ष में हमें अणुव्रत के संकल्पों का पालन करना है ताकि हम एक स्वस्थ समाज एवं देश की रचना में सहभागी बन सकें। समणी गौतमप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें मानव को सही मायने में मानव बनाने का प्रयास करना है तभी राष्ट्र एवं समाज का निर्माण हो सकता है।

स्वस्ति श्री चारुकीर्ति पट्टमाचार्यवीर्य भट्टारक जी ने अपने मठ में आचार्य तुलसी की स्मृति करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी, सुशील महाराज, आचार्य विद्यानन्दजी ने एक ही मंच से विश्वशान्ति की आवाज बुलंद की थी। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत को नए रूप में प्रस्तुत कर मानवता का बहुत कल्याण किया है। वे भगवान महावीर के संदेश को आगे बढ़ाने वाले आचार्य थे।

कार्यक्रम में मैंगलोर वासियों ने सुनियोजित ढंग से सारी व्यवस्था की। इस अवसर पर 'असली आजादी अपनाओ', 'नशामुक्ति' आदि फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

पश्चिमांचल

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन के क्रम में पश्चिमांगल में अणुव्रत संकल्प यात्रा समणी शारदाप्रज्ञाजी व समणी रत्नाप्रज्ञाजी के नेतृत्व में **दिनांक 5 अप्रैल, 2014** को बुरहानपुर शहर में पहुंची। समणीद्वय के सान्निध्य में शिवकुमार सिंह इंजीनियरिंग कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 400 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। कालेज के प्रबंधक श्री वीरेन्द्र सिंह एवं अध्यक्ष श्रीमती किशोरीदेवी सिंह इस अवसर पर उपस्थित थे, जिन्हें खानदेश के अध्यक्ष श्री जतनलाल सेठिया, मंत्री श्री विजयचंद सेठिया ने अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट की। समणी जी ने उपस्थित जनसमुदाय को अणुव्रत की उपयोगिता बताते हुए उन्हें अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी।

दोपहर एक बजे नवल सिंह कोऑपरेटिव शक्कर कारखाना, बुरहानपुर में लगभग 500 व्यक्तियों के बीच कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बुरहानपुर में लगभग 461 अणुव्रत संकल्प पत्र विद्यार्थियों,

मजदूरों, व्यापारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भरे गए।

दिनांक 6 अप्रैल, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा समणी शारदाप्रज्ञाजी व समणी रत्नाप्रज्ञाजी के नेतृत्व में परमणी से बीड की ओर रवाना हुई और बीड से 45 किलोमीटर पहले तेजगांव में पहला कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 50 व्यक्ति उपस्थित थे। उन्हें 35 व्यक्तियों को अणुव्रत संकल्प पत्र भरे। समणीद्वय ने अणुव्रत के 11 नियमों को विस्तार से समझाया।

दिनांक 7 अप्रैल, 2014 को तेरापंथ सभा बीड के जैन भवन से प्रातः 9.45 बजे अणुव्रत रैली प्रारंभ हुई, जिसमें तेरापंथ समाज के सभी सदस्य उपस्थित थे। रैली जिला कारागृह, बीड पहुंची। लगभग 300 कैदियों के बीच आयोजित कार्यक्रम में समणीद्वय ने अणुव्रत के नियमों की व्याख्या की जिससे प्रभावित होकर लगभग 120 व्यक्तियों ने स्वेच्छा से अणुव्रत संकल्प पत्र भरे। अपराह्न 4 बजे आदित्य इंजीनियरिंग एवं आदित्य मेडिकल कॉलेज में स्टाफ एवं विद्यार्थियों के बीच कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 350 विद्यार्थी एवं 25 स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कालेज को दो अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किए गए। यहाँ 220 अणुव्रत संकल्प पत्र भरे गए। विद्यार्थियों के बीच 220 नोट बुक वितरित की गई। सायं 6 बजे नवगण होम्योपैथिक कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 150 विद्यार्थी एवं 35 डाक्टर उपस्थित थे। कॉलेज को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। यहाँ 70 अणुव्रत संकल्प पत्र भरे गए। विद्यार्थियों के बीच 80 नोट बुक वितरित की गई। रात्रि के लगभग 8 बजे कपड़ा एवं बुनकर दुकानों के श्रमिकों एवं अन्य स्टाफ सदस्यों के बीच कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 110 श्रमिक आदि एवं तेरापंथ समाजके 4 0स दस्यउ पस्थितथे।ल गभग8 0अ णुव्रत संकल्प पत्र भरे गए।

दिनांक 8 अप्रैल, 2014 को प्रातः 8.30 बजे राजस्थानी स्कूल एवं कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें 320 विद्यार्थी एवं 30 स्टाफ उपस्थित थे। विद्यालय के प्राध्यापकों को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। समणीद्वय द्वारा अणुव्रत के नियमों की व्याख्या की गई, जिससे प्रभावित होकर लगभग 25 व्यक्तियों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे। विद्यार्थियों को 320 नोटबुक वितरित की गई। पूर्वाह्न 10 बजे सावरकर कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहाँ लगभग 100 व्यक्तिउ पस्थितथे।क ॉलेजक ेअ णुव्रतअ ाचारस ंहिताप ट्टभ ेंट किया गया। 35 व्यक्तियों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे। दोपहर 12.30 बजे सिविल अस्पताल में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 400 लोग उपस्थित थे। अस्पताल के प्रभारी को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया। यहाँ 100 अणुव्रत संकल्प पत्र भरे गए।

पश्चिमांचल में अणुव्रत संकल्प यात्रा की प्रवहमानता में समणी शारदाप्रज्ञाजी व समणी रत्नाप्रज्ञाजी का कुशल नेतृत्व एवं बीड क्षेत्र में उसकी उल्लेखनीय गति-प्रगति में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बीड के अध्यक्ष श्री अनुपम जैन, तेरापंथ अणुव्रत समिति के अध्यक्ष उपासक श्री सुभाषचंद्र समदरिया, श्री धीरज डूंगरवाल, श्री रोहित समदरिया, श्री रोशन समदरिया, श्रीमती सुषमा मौजकर, श्रीमती प्रेक्षा समदरिया आदि के अतिरिक्त तेरापंथ युवक परिषद तथा महिला मंडल के सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा।

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों एवं प्रेरणा से प्राप्त हुई (दिनांक : 01.04.2014 से 30.04.2014)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

11,00,000/-	श्री निर्मल गादिया, चेन्नई
11,00,000/-	श्री सुरेन्द्र कच्छारा, मुम्बई
5,00,000/-	श्री शान्तिलाल बोराना, बैंगलोर
3,00,000/-	श्री सुरेशचन्द, प्रवीन कुमार राजेन्द्र कुमार चम्पालाल चोपड़ा, खामगांव
1,00,000/-	श्रीमती लक्ष्मी देवी सेठिया, रायपुर
1,00,000/-	श्री केवलचन्द जैन, बेलगांव
1,00,000/-	श्री प्रकाशचन्द लुणावत, रायपुर
1,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लखीमपुर
1,00,000/-	श्री पारसमल पटवा, पेटलावद
1,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर
1,00,000/-	श्री लक्ष्मीचन्द नलवाया, रतलाम
50,000/-	श्री दिलीप कुमार झमकलाल भंडारी, पेटलावद
11,000/-	श्री पारसमल गोलछा, मुम्बई

स्मारक स्थल

5,51,000/-	श्री जे.एस. बन्जारा, कोलकाता
1,50,000/-	श्री सम्पतमल बैद, चास-बोकारो
21,000/-	श्री नीरज जैन, हिसार

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

15,00,000/-	श्री बिमल कुमार-संदीप-प्रियंक नाहटा परिवार, सरदारशहर-गुवाहाटी (प्रेरणा स्रोत - श्रीमती सुशीला देवी नाहटा)
1,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुम्बई
21,000/-	श्री सुरेन्द्र कुमार सुराना, कोलकाता
11,000/-	श्री बच्छराज बैद, कोलकाता

महासभा शताब्दी वर्ष भवन निर्माण योजना के "CENTURION DONORS"

25,00,000/-	श्री बिमल कुमार-संदीप-प्रियंक नाहटा परिवार, सरदारशहर-गुवाहाटी (प्रेरणा स्रोत - श्रीमती सुशीला देवी नाहटा)

छात्रवृत्ति

1,01,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, फरीदाबाद

सहभागिता योजना

65,250/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, फरीदाबाद

शताब्दी अक्षय निधि कोष

समग्र समाज अक्षय निधि कोष से जुड़कर दायित्व बोध का परिचय दें एवं गौरव की अनुभूति करें

"शताब्दी अक्षय निधि कोष" की स्थापना का उद्देश्य है कि कोष को अक्षुण्ण रखते हुए इसकी आय से संस्था की आवश्यकताओं के साथ-साथ अन्य सामाजिक अपेक्षाओं की संपूर्ति की जाए और संपूर्ण समाज को कंधे से कंधा मिलाकर नव उन्मेषों के आरोहण में सहभागी-सहयोगी बनने हेतु प्रेरित किया जाए। इस कोष में अंशदान करके तेरापंथ समाज के प्रत्येक सदस्य के मन में दायित्व बोध का भाव विकसित होगा और सामाजिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में सहभागिता करके हर एक सदस्य को गौरव की अनुभूति होगी। एकरुपता एवम् सुव्यवस्था की दृष्टि से प्रति सदस्य सहयोग राशि ग्यारह हजार प्रस्तावित है परन्तु आप अपनी भावना के अनुरूप अधिक या कम राशि का भी योगदान कर सकते हैं। मूल लक्ष्य समाज के प्रत्येक सदस्य की इस महान उपक्रम में सहभागिता है।

- अपने पूर्वजों की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु इस कोष में उनके नाम से भी सहभागिता कर उनका नामोल्लेख करवा सकते हैं।
- भावी पीढ़ी को प्रेरणा देने के उद्देश्य से अनुदानदाताओं को सूचीबद्ध करते हुए एक इलेक्ट्रोनिक कियोस्क का निर्माण।
- अनुदानदाताओं का नाम महासभा के इतिहास में अमिट रूप से अंकित रहे इस हेतु पांच खंडों में ताम्रपत्र आलेख का निर्माण।
- अनुदानदाताओं का महासभा द्वारा अनुदान अनुमोदना पत्र द्वारा सम्मान।

समग्र समाज से आर्थिक सहयोग की कामना के साथ....

बिमल कुमार नाहटा
प्रधान न्यासी

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

शताब्दी अक्षय निधि कोष अप्रैल - 2014 के सहयोगी

61,00,000/-	श्री बिमल कुमार-संदीप-प्रियंक नाहटा परिवार, सरदारशहर-गुवाहाटी (प्रेरणा स्रोत - श्रीमती सुशीला देवी नाहटा)
24,00,000/-	सर्वश्री बुधमल, सुरेन्द्र, तुलसी, कमल दुगड़, रतनगढ़ - कोलकाता (प्रेरणास्रोत श्रीमती सोहनी देवी दुगड़)
2,50,000/-	श्री दुलीचन्द भूरा परिवार, नोखामंडी-कोलकाता
11,000/-	श्री बिमल कुमार नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	श्रीमती सुशीला नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	श्री संदीप कुमार नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	श्रीमती मीता नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	सुश्री सलोनी नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	श्री प्रियंक नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	सुश्री सांची नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी
11,000/-	स्व. प्रतापमल जी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा
11,000/-	स्व. बुधमल जी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा, सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा
11,000/-	स्व. लक्ष्मीपत जी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा-सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा
11,000/-	स्व. हंसराज जी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा-सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा
11,000/-	स्व. बच्छराज जी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा-सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा
11,000/-	स्व. रतनी देवी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा-सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा

11,000/-	स्व. गजराज जी नाहटा की पुण्य स्मृति में श्री बिमल कुमार नाहटा-सरदारशहर-गुवाहाटी द्वारा
11,000/-	श्री पूनमचन्द चन्दा बाई बरबेटा, रतलाम
11,000/-	श्री फूलचन्द ज्योतिबाला बरबेटा, रतलाम
11,000/-	श्री राजकुमार मधुबाला बरबेटा, रतलाम
11,000/-	स्व. कस्तूरचन्द जी बरबेटा की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. फतेहचन्द कस्तूरचन्द जी बरबेटा की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. चम्पालाल केशरीमल जी कटारिया की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. सम्पतबाई चम्पालाल जी कटारिया की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. घासीराम फतेहचन्द जी बरबेटा की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. केसरबाई घासीराम जी बरबेटा की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. धनराज घासीराम जी बरबेटा की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा
11,000/-	स्व. चन्द्रकान्ता धनराज जी बरबेटा की पुण्य स्मृति में श्री पूनमचन्द बरबेटा-रतलाम द्वारा

उपासक प्रशिक्षण शिविर

(दिनांक 16 जुलाई से 26 जुलाई 2014)

परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आगामी 16 जुलाई से 26 जुलाई तक दिल्ली में उपासक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है।

नए उपासक बनने वालों के लिए

दिनांक 16 जुलाई को मध्याह्न में प्रवेश परीक्षा आयोजित होगी। प्रवेश परीक्षा में चयनित भाई-बहनों को ही शिविर में प्रवेश दिया जा सकेगा। प्रशिक्षण के पश्चात 24 जुलाई को चयन प्रक्रिया (परीक्षा) होगी।

सहयोगी से प्रवक्ता उपासक बनने वालों के लिए

जो सहयोगी उपासक दो बार या उससे अधिक पर्युषण यात्रा कर चुके हैं एवं प्रवक्ता उपासक बनना चाहते हैं उनके लिए निर्धारितः पाठ्यक्रमानुसारच यनप्र क्रिया(परीक्षा)क ाअ ायोजनर्दि नांक2 4ज ुलाईक ोंकयाग याहै ।ा लखित,व क्तृत्व शैली व समूह-चर्चा (Group Discussion) इन तीन रूपों में चयन प्रक्रिया होगी। प्रशिक्षण हेतु 20 जुलाई से सम्पर्क कक्षाएं (Contact Classes) आयोजित होंगी, इनमें अवश्य भाग लें।

उपासक सम्मेलन

दिनांक 24, 25 व 26 जुलाई को त्रिदिवसीय प्रवक्ता उपासकों का सम्मेलन आयोजित किया गया है। सभी प्रवक्ता उपासक इसमें अवश्य भाग लें। सहयोगी उपासकों की उपस्थिति स्वैच्छिक है।

इस बारे में अधिक जानकारी के लिए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा 09327071376 एवं सह-संयोजक श्री महावीर प्रताप दुगड़ से मो. 9331019455 पर संपर्क किया जा सकता है।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

[illegible]

[illegible]

[illegible]	:	06.04.2014
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]

[illegible]

[illegible]	:	07.03.2014
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]

[illegible]

[illegible]	:	22.2.2014
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]

[illegible]

[illegible]	:	20.4.2014
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]
[illegible]	:	[illegible]

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारियों द्वारा विदेशी की धरती पर पहली बार संगठन यात्रा की गई और दुबई एवं लंदन में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। उस यात्रा के दौरान अनेक प्रवासी परिवारों से संपर्क स्थापित किया गया और महासभा की ऐतिहासिक परियोजनाओं तथा विद्यमान गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया गया, जिससे उनमें तेरापंथ धर्मसंघ एवं महासभा द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी प्राप्त हुई और उन्होंने महासभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रस्तुत है प्रवासी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा इस प्रथम संगठन यात्रा के महत्व एवं उपलब्धि के संबंध में व्यक्त विचार, जो हमारे लिए प्रेरणादायक है। – संपादक

Wednesday 23-04-14

Respected Shri Adhyaksha Mahoday,

Saadar Jaijinendra.

I am indeed grateful that yourgoodself, Shri Vimalji Nahata, Chief Trustee, Shri Binodji Baid, Mahamantri and other respected officials of JSTM were able to make a Sanghthan Visit to Dubai. It was indeed an honour to personally meet all of you Gentlemen.

Apart from one to one interactions with selected individuals, all of you had attended and addressed a Parichay Sammelan here on 22nd April. We were pleased to learn not only about various ongoing activities of JSTM but also about your future plans. Many Shrawaks present there have submitted their signed Anuvrata Sankalp Patras. Some have given their confirmation to participate in Akshaya Kosh Yojana. In next few days you will see many new entries from Dubai in your Jan Gan-na database. I will ofcourse follow-up all these here.

On another level, the meeting this morning with Seniors of UAE Jain Samaj was also very encouraging... where in all of you had a chance to meet and exchange views / ideas with prominent non terapanthi jains here. All these individuals are very committed people for jain causes and have strong local experience and expertise. Ofcourse, as I explained to you, all 4 sects actively participate in all of local jain activities / programs. This harmony and sense of co-operation amongst all 4 sects is a good local asset. Involvement, guidance and participation of the people we met this morning will greatly help us in JSTM 's long term plans for Dubai. For your ready reference, here are the names of people we met this morning:

1.	Shri Chandu Siroya	President, UAE Jain Sangh (also Founding Member of UAE Jain Sangh & Past President of Dubai Jain Social Group)
2.	Shri Shekhar Patni	Vice President, UAE Jain Sangh (also Founding Member of UAE Jain Sangh & Past President of Dubai Jain Social Group)
3.	Shri Vipul Kothari	Secretary – JITO Dubai & Honorary Auditor of Dubai Jain Social Group
4.	Shri Lalit Kamdar	Founding Member of UAE Jain Sangh & Past President of Dubai Jain Social Group
5.	Shri Paras Jalori	Founding Member of UAE Jain Sangh & Past President of Dubai Jain Social Group
6.	Shri Rajmal Jain	Committee member of UAE Jain Sangh

Hope all of you had a comfortable flight to London. Best Wishes for successful trip.

Once again, all of us Dubaiwalas feel privileged that the new JSTM team under your leadership has chosen Dubai as it's first destination in Sanghtan Yatra. We are indeed blessed that in 100 years plus history of JSTM – yesterday Dubai became first destination of JSTM's International Sanghthan Yatra.

Aap sabhi ko dhanyawaad ewam hardik aabhaar,

R K Bengani
+971 50 652 3025

Thursday, 30-04-2014

I am delighted the event went so well. Samani Pratibhapragya and the JVB-London team have done everything.
It was good to celebrate Acharya Tulsi's birthday centenary at SOAS. The event was noted even by those who did not participate on Saturday. I hope we will have more academic collaborations with his brainchild the JVB Institute.
Thank you for all your help!

Dr Peter Flügel
Chair, Centre of Jaina Studies
Department of the Study of Religions
Faculty of Arts and Humanities
School of Oriental and African Studies
University of London
Thornhaugh Street, Russell Square
London WC1H OXG

Wednesday 30-04-14

Dear Kamalji
greetings of the day,
I hope you have reached home back safely. I realised your mission require continuous journey and meetings. I am impressed that you are doing it wonderfully.
In many beautiful memories from your task, you can also be proud of the fact that you spoke in campus of one of the best university of the world. Last year, this university (UCL) was ranked fourth in the world. I just wanted to highlight a small but cherish-able fact.
Due to your mission and dream.....We got opportunity to have short time together and meeting..... generated good memories....now, in your guidance and leadership, hoping to realise your dream in a reality.
kind regards,
Sunil Dugar
Sr Clinical Research Physician
ICON Clinical Research

Wednesday 30-04-14

Dear Kamalji

It was a great pleasure meeting you here in London. I was very impressed with your total dedication, massive support, and untiring efforts to raise awareness about our great religion.
Hope to see you soon. If I can be of any assistance, pls do not hesitate to call me.

Nirmal Banthia

Tuesday 29-04-14

I wanted to say that what a fitting tribute it was indeed. So well attended - Full ! So well structured too. I was very glad to have made the special journey from Leicester to partake in this memorable event especially as I could not go to India. Satish Kumar was a perfect choice as Keynote speaker and SOAS under Dr Peter a perfect Place . Infact. Atul, Samani Pragyaji, the video, Dr. Duggar - all the speakers devoted delivery and presentations made it so personal that I felt that even I had met Acharya Tulsi in person. Well done to all - please forward to the rest as I do not have their mails .

Smita Shah
Jain Centre Europe - Leicester
Ex President

कथामृत

(पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण अपने पावन प्रवचन के दौरान कभी-कभी लघुकथाओं के माध्यम से श्रोताओं को संबोध प्रदान करते हैं, वे लघुकथाएं इतनी रोचक एवं हृदयग्राही होती हैं कि उनकी छाप हृदय पर आजीवन बनी रहती है। हम उन्हें यहाँ प्रस्तुत कर अभ्युदय के पाठकों को उससे लाभान्वित कराना चाहते हैं – संपादक)

कीमती सामान

एक सेठ का विशाल भवन था। एक दिन अपने व्यापारिक कार्य से उसे पास के नगर में जाना पड़ा। घर में सेठानी और नौकर थे। कोई कारण बना और मकान में अचानक आग लग गई। अप्रत्याशित रूप से लगी आग के कारण एक बार तो सब हड़बड़ा गए, फिर कुछ जागरूक हुए और आभूषण आदि कीमती सामान निकाल लिया गया। सेठ को तत्काल अग्निकाण्ड की सूचना दी गई। वे घर पहुंचे तब तक दो घंटे बीत गए थे। पूरा मकान जलकर राख हो चुका था।

सेठानी ने सेठ को सांत्वना देते हुए कहा कि ज्यादा चिन्ता की बात नहीं, घर तो जल गया लेकिन सारा कीमती सामान सुरक्षित निकाल लिया गया है।

सेठ के चेहरे पर कुछ आश्वस्ति का भाव आया, लेकिन तभी जैसे कुछ याद आया उसने इधर-उधर देखा, फिर पूछा - 'मुन्ना कहां है?'

सेठानी चौंक पड़ी जलते मकान से तिजोरी और आभूषण निकालने में मकान के भीतर सो रहे डेढ़ वर्षीय इकलौते पुत्र की याद नहीं आई।

खोटा सिक्का

अखबार बेचने वाला साइकिल से जा रहा था । सामने से आ रहे व्यक्ति ने देखा तो अखबार पढ़ने की इच्छा से अखबार की मांग की। अखबार वाले ने चार आने पैसे मांगे। उस व्यक्ति ने चवन्नी दी तो अखबार वाले ने अखबार की एक प्रति उसके हाथ में थमाकर साइकिल तेज गति से आगे बढ़ा दी।

अखबारख रीदनेव ालाम नहि मि नप्र सन्नह ुआ कि मैंनेअ पनीख ोटीच वन्नीक ाउ पयोगी कतनीस फाईस ेक र लिया ाउ सने सड़क के किनारे एक स्थान पर बैठकर जैसे ही अखबार के मुखपृष्ठ पर दृष्टि डाली तो देखा वह तीन महीने पहले का अखबार था। उसकी प्रसन्नता तत्क्षण गायब हो गई।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)
3 [illegible] - 700 001
[illegible] : 2235 7956, 2234 3598, [illegible] : 033 2234 3686
email: info@jstmahasabha.org